Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 43 अंक-02
कल्पादि सम्वत् 1972949119

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 10 अप्रैल से 16 अप्रैल 2019 तक
चैत्र शुक्ल पंचमी से चैत्र शुक्ल द्वादशी 2076 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

मातृ देवो भवः.. पृष्ठ- 2

अंगूर खाने के फायदे.... पृष्ठ- 4

राम नवमी पर.... पृष्ठ- 5

डॉ० भीमराव अम्बेडकर.. पृष्ठ- 8

कैसे बढ़ जाती है.... पृष्ठ- 12

शुभकामनाएं

अखिल भारत हिन्दू महासभा की ओर से सभी पाठकों व देशवासियों को श्रीरामनवमी की हार्दिक शुभकामनायें।

चन्द्रप्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

सेना ने किया पाकिस्तान की सात चौकियों को तबाह

गुलाम कश्मीर को भारत में सम्मिलित करने की मांग

● संवाददाता ●

राजौरी और पुंछ जिले में सीमावर्ती इलाकों को निशाना बनाने वाले पाकिस्तानी सैनिकों को मुंह तोड़ जवाब देते हुए भारतीय सैनिकों ने सीमा पार नियंत्रण रेखा से लगी पाकिस्तान की सात चौकियां तबाह कर दी। इसमें पाकिस्तान सेना के कई जवान हताहत हुए है। पाकिस्तानी गोलीबारी के मद्देनजर एहतियाती तौर पर पुंछ और राजौरी जिले में सीमा से लगे स्कूलों को अधिकारियों ने बंद कर दिया है। अधिकारियों ने बताया कि पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर पाकिस्तानी सेना की ओर से की गई भारी गोलाबारी में बीएसएफ के एक इंस्पेक्टर शहीद हो गए और पांच साल की एक बच्ची सहित दो असैन्य

शेष पृष्ठ 10 पर

सुप्रीम कोर्ट ने कहा हुर्रियत और आतंकी संगठनों के बीच रिश्तों के पर्याप्त सबूत

हुर्रियत पर लगे प्रतिबंध – हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

आतंकवाद को फंडिंग के मामले में एक कश्मीरी कारोबारी जहूर अहमद शाह वटाली की जमानत याचिका रद्द कर दी है। सुप्रीम कोर्ट ने आतंकवाद को फंडिंग के मामले में एक कश्मीरी कारोबारी जहूर अहमद शाह वटाली की जमानत याचिका रद्द कर दी है। साथ ही कहा कि केंद्रीय जांच एजेंसी एनआइए के पास जम्मू–कश्मीर में हुर्रियत नेताओं और आतंकी संगठनों के बीच गहरे रिश्तों के पर्याप्त सुबूत मौजूद हैं। एनआइए के पास इस बात के भी सुबूत है कि इनकी गतिविधियां भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ने को लेकर हैं। इससे पहले, पाकिस्तानी आतंकी संगठन लश्कर–ए–तैयबा के सरगना हाफिज मुहम्मद सईद को धन मुहैया कराने के आरोप में एनआइए ने वटाली को गिरफ्तार किया था। लेकिन फिर दिल्ली हाई कोर्ट ने उसे जमानत दे दी थी। जस्टिस एएम खानविल्कर और अजय रस्तोगी की खंडपीठ ने कहा कि भारत सरकार के खिलाफ युद्ध छेड़ने में अलगाववादी संगठन हुर्रियत कांफ्रेंस के नेताओं और आतंकी संगठनों के बीच गहरे संबंध के सुबूत हैं। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला इस लिहाज

शेष पृष्ठ 10 पर

मातृ देवो भवः

श्री ओम् उपाध्याय

या देवी सर्व भूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

'माँ' 'भू' ॐ आदि एक अक्षर वाले शब्द हैं किन्तु उनके अभिप्राय उनके अर्थ उनके मतलब (मीनिंग) इतने गहन, इतने अहम्, इतने ऊँचे और इतने विशाल हैं कि उन्हें शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। वे शब्दातीत हैं, कल्पनातीत हैं। यथा अक्षर ॐ अ ऊ म से निर्मित है जिसका निहितार्थ है अनंत ऊर्जा मण्डित, भू अर्थात पृथ्वी, धरा क्षिति भूमि ठीक ऐसे.ही माँ के म में आ की मात्रा, 'माँ' जिसके माने 'मन', 'ममता' और 'आ' का अर्थ आल्हाद, स्नेह, प्रेम मतलब माँ माने एक ऐसा स्वरूप, एक ऐसा रिश्ता, एक ऐसा चरित्र, एक ऐसा पात्र जिसका मन आल्हाद से भरा हो जिसकी ममता आल्हादित हो और चूंकि मन और आल्हाद अपरिमित है, अनंत है इसलिए माँ बेजोड़ है। आहाकार में वामन है किन्तु कार्यान्वयन में असीम है। विराट है।

वैसे तो माँ अलौकिक भी है, वर्णातीत भी है, किन्तु चूंकि हम लौकिक हैं इसलिए परिवार के अति महत्वपूर्ण किरदार जिसके बिना परिवार साकार नहीं होता ऐसी माँ, ऐसी जननी, ऐसी शारवत स्वरूपा नारी रूप चाहे कामकाजी हो या गृहिणी, को कभी हम विस्मृत नहीं कर सकते। माँ परिवार का अविभाज्य अंग है। माँ की चाहत अपने पुत्र–पुत्रियों पर सदैव समान होती है न किसी पर रतीभर कम न ज्यादा। किन्तु परिवार के हर सदस्य को ऐसा महसूस होता, ऐसा लगता है कि माँ सबसे अधिक उसे ही चाहती है। पिता चाहे कितने ही अच्छे क्यों न हो संतानें माँ के करीब पिता से अधिक होती हैं। व्यवहार में भी सदैव आपकी मातृ भाषा (मदर टंग) क्या है ही पूछा जाता है।

माँ के विषय में यह कितना सार्थक सत्य है कि हर शिशु की पहली गुरु माता ही होती है। बच्चों का पहला संवाद भी माँ से ही होता है। बच्चा पहला शब्द भी माँ ही पुकारता है और बच्चे का सर्वाधिक सान्निध्य भी माँ के साथ ही होता है। माँ अपने शिशु को संस्कार देती है। आरंभिक शिक्षा देती है। उसका भरण–पोषण किशोर होने तक करती है और बच्चियाँ तो सब कुछ माँ से ही सीखती हैं और तब तक सीखती हैं जब तक वह विवाहित होकर विदा नहीं हो जाती। माँ बच्चे–बच्चियों के बहुत करीब होती है इसलिए माँ को उनकी पसंद–नापसंद का भी भली–भाँति पता होता है। माँ चाहे पढ़ी–लिखी या अनपढ़ वह संतानों को हमेशा ही बेहतर बनाने में जुटी रहती है। इतिहास गवाह है कि माँओं ने सदैव ही अपने बच्चों को सही राह दिखाई। चाहे पौराणिक हो या आधुनिक माँओं में माँ ही दिखी। यदि किसी विशेष माँ का उदाहरण दिया जाए तो अन्य माँओं के साथ अन्याय होगा क्योंकि सारी माँएं ही विशेष होती हैं। माँएं किसी देश काल से बंधी नहीं, वे हमेशा माँ थीं, माँ हैं और माँ ही रहेंगी। माँ निर्विवाद रूप से सिर्फ माँ है और केवल माँ है।

माँ एक ऐसा शब्द, एक ऐसा अक्षर जिसमें ममता उमड़ती है और स्नेह रिसता है। माँ के गुण भी असीमित हैं, उसे कुछ या एक गुण में परिभाषित नहीं किया जा सकता। माँ की गोद, माँ के आंचल में समस्त सुख है जो इस लौकिक संसार में हैं। माँ के बिना शिशु की और शिशु के बिना माँ की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। ऐसे ही बिना माँ के परिवार के विषय में सोचना भी संभव नहीं है। माँ को और माँ के मनोविज्ञान को जानना–समझना लगभग असंभव है। माँ प्रकृति की, परम पिता परमेश्वर की प्राणियों को अद्भुत, अप्रतिम व शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोग व्यक्तिगत व व्यावसायिक सम्बन्धों के बीच आप व्यस्त रहेंगे। नौकरी वाले जातक स्थानान्तरण को लेकर मानसिक रूप से परेशान रहेंगे परन्तु आप के द्वारा किये गये प्रयासों में सफलता मिल सकती है।

वृष : इस सप्ताह कुछ इच्छाओं की पूर्ति होगी तथा कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त उपलब्धियों से आप सभी परिस्थितियों में सहज महसूस करेंगे। ऑफिस में सहकर्मियों और अधीनस्थ व्यक्तियों का साथ आनन्दायक रहेगा। सामाजिक क्षेत्र में सहभागिता बनायें रखने से मान–सम्मान में वृद्धि होगी।

मिथुन : इस सप्ताह अत्यन्त कष्ट की स्थिति में रहेंगे इससे बचने के लिये नकारात्मक सोच को हावी न होंने दें। व्यवसायिक लोंगो के साथ नयें अनुबन्ध करने के अवसर प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत सम्बन्धों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

कर्क : इस सप्ताह पति व पत्नी के आपसी नासमझी के कारण पूरे परिवार में तनाव का माहौल रहेगा। आप अपनी जिम्मेदारियों से मुंह न मोड़ें तथा उनका डटकर मुकाबला करें तभी अपने आपको साबित कर पायेंगे।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोग पारिवारिक समस्याओं को लेकर चिन्तित रहेंगे जिसके कारण किसी कार्य में मन नहीं लगेगा। नौकरी व व्यवसाय में परिवर्तन का समय आ गया है लेकिन रूके हुये कार्यो में आपको शीघ्र ही सफलता मिलेगी।

कन्या : घर व ऑफिस में सामंजस्य बिठा पाने में आप अक्षम रहेंगे। इस सप्ताह आपके पास कोई ऐसा प्रस्ताव आयेगा जिसके दूरगामी परिणाम अत्यन्त शुभ रहेंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ हंसी–मजाक में समय व्यतीत होगा।

तुला : आर्थिक उपलब्धियों के लिये नकारात्मक व भावनात्मक सोच को बदलना ही हितकर रहेगा। इस सप्ताह नयें लोंगो को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। सन्तान के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को बखूबी निभायें अन्यथा टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

वृश्चिक : इस सप्ताह पुरानी समस्याओं का समाधान होने के आसार है। महिलायें अपने भावनात्मक रिश्तों में अति शीघ्रता न करें अन्यथा मुसीबत में पड़ सकती है। पैतृक सम्पत्ति में हिस्सेदारी मिलने पर नयें प्लानों को सक्रियता प्रदान करेंगे।

धनु : इस समय कुछ लोगों के परिवार में दुख दर्द से भरा माहौल रहने की आशंका है। धन से सम्बन्धित लम्बित मामलों में प्रगति होने के आसार है। किसी पार्टी में आप शिरकत करेंगे परन्तु वहाँ पर आपके मान–सम्मान को ठेस पहुंच सकती है।

मकर : इस सप्ताह परिश्रम को निरन्तर करना पड़ेगा जिसे आप टालना चाहे तो भी टाल नहीं सकते है। किसी चीज का अन्तर नजर आ रहा इसका प्रतिरोध करना व्यर्थ रहेगा। अनचाहे सम्बन्धों के प्रति कड़ा रूख अपनायें।

कुम्भ : इस सप्ताह आपको धैर्य व साहस का परिचय देना पड़ेगा। आर्थिक मामलों में सावधानी अपेक्षित है अन्यथा समस्याओं से घिर सकते हैं। किसी नजदीकी व्यक्ति को अधिक महत्व न दें तो हितकर रहेगा। आपके परिश्रम के दूरगामी परिणाम लाभदायक रहेंगे।

मीन : इस सप्ताह आपको आपने आलस्य के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। आप अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिये अपनी बात सबके समक्ष रखने का प्रयास करें। नवयुवक अपने कैरियर को लेकर काफी चिन्तित रहेंगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि।।७ (ग)।।

जगत् में जितने जड़ और चेतन जीव हैं, सबको राममय जानकर मैं उन सबके चरणकमलों की सदा दोनों हाथ जोड़कर वन्दना करता हूँ।।७ (ग)।।

देव अनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब।
बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब।। ७ (घ)।।

देवता, दैत्य, मनुष्य, नाग, पक्षी, प्रेत, पितर, गन्धर्व, किन्नर और निशाचर सबको मैं प्रणाम करता हूँ। अब सब मुझ पर कृपा कीजिये।। ७ (घ)।।

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी।।
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

चौरासी लाख योनियों में चार प्रकार के (स्वदेज, अण्डज, उद्भिज्ज, जरायुज) जीव जल, पृथ्वी और आकाश में रहते हैं, उन सबसे भरे हुए इस सारे जगत् को श्रीसीताराममय जानकर मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।।१।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 10 अप्रैल से 16 अप्रैल 2019 तक

अध्यक्षीय

चुनौतियों के बीच है चुनाव आयोग

२०१६ के आम चुनाव में एक ओर जहां चुनाव आयोग पर निष्पक्ष चुनाव कराने की जिम्मेदारी होगी वहीं उसे चुनाव में काले धन के प्रवाह को रोकने के लिए भी कमर कसनी होगी। चुनावी हिंसा न हो इसके लिए भी ठोस कदम उठाने होंगे। जिस तरह हर चुनाव में राजनीतिक दलों के नुमाइंदों और उनके संबंधियों से लाखों की नकदी बरामद होती है, इस बार भी उस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। चूंकि हर चुनाव में बाहुबली उम्मीदवार चुनावी जंग में उतरते हैं लिहाजा इस बार भी उनके मैदान में उतरने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। ऐसे में चुनाव आयोग के लिए निष्पक्ष और शांतिपूर्वक चुनाव कराना किसी अग्नि परीक्षा से कम नहीं होगा। यह किसी से छिपा नहीं है कि एक अरसे से आयोग चुनाव सुधार के लिए राजनीतिक दलों से अपील कर रहा है कि वह राजनीति से अपराध और धनबल के दुष्प्रभाव को खत्म करने के लिए कदम उठाएं, लेकिन दल इस पर गौर फरमाने को तैयार ही नहीं हैं। राजनीतिक दलों को अच्छी तरह पता है कि उनकी इस अनदेखी से सुधार की प्रक्रिया बाधित हो रही है और उन लोगों को चुनाव लड़ने का मौका मिल रहा है जो जातिवादी, क्षेत्रवादी, अपराधी और बाहुबली हैं। जब ऐसे लोग मैदान में बतौर उम्मीदवार उतरेंगे तो स्वाभाविक है कि आचार संहिता और राजनीतिक मर्यादा तार– तार होगी ही। साथ ही वे चुनाव जीतने के लिए न सिर्फ कालेधन का इस्तेमाल करेंगे बल्कि चुनावी हिंसा से भी बाज नहीं आएंगे। इस तरह के वातावरण में आयोग के लिए निष्पक्ष चुनाव कराना किसी चुनौती से कम नहीं होगा। इसलिए और भी कि जहां एक ओर साफ–सुथरे व अच्छे उम्मीदवार चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित मानकों के मुताबिक धन खर्च करेंगे वहीं बाहुबली और अपराधी किस्म के उम्मीदवार चुनाव जीतने के लिए धन को पानी की तरह बहाएंगे। ऐसे में साफ–सुथरे उम्मीदवारों के बजाए दागी और धनबली उम्मीदवारों के चुनाव जीतने की संभावना बढ़ जाएगी। यहां जानना आवश्यक है कि तय सीमा से अधिक खर्च चुनाव आचार संहिता का उलंघन है लेकिन चुनाव आयोग द्वारा हर चुनाव में करोड़ों–अरबों रुपया जब्त किया जाता है। इस बार भी कई राज्यों में बड़े पैमाने पर काला धन पकड़ा जा रहा है। बेहतर है कि सभी दल चुनाव आयोग के साथ मिल बैठकर चुनावी धनराशि की सीमा निर्धारित करें। इससे न सिर्फ कालेधन के प्रवाह को रोकने में मदद मिलेगी बल्कि सुधार की गाड़ी भी आगे बढ़ेगी। कुछ दल तो इस तरह के सुझाव को सिरे से खारिज कर उससे उत्पन होने वाली समस्याओं का प्रेत खड़ा करते रहे हैं। दरअसल उनकी मंशा व नीयत में ही खोट है। वे नहीं चाहते हैं कि चुनाव में सुधार हो। इसका मुख्य कारण यह है कि जब उनके चुनावी खर्च को कॉरपोरेट घराना वहन करने को तैयार है और बदले में वे उन्हें देश की अकूत संपदा लूटने की छूट देते हैं तो फिर वे चुनाव सुधार की दिशा में आगे क्यों बढ़ेंगे? देखा जाए तो दागियों की इतनी बड़ी संख्या अगर संसद और विधानसभाओं में पहुंच रही है तो यों ही नहीं है। दरअसल राजनीतिक दलों को विश्वास हो गया है कि जो जितना बड़ा दागी है उसके चुनाव जीतने की उतनी ही अधिक गारंटी है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि पिछले तीन दशक से दागी चुनाव जीतने में सफल भी हो रहे हैं। ऐसे में अगर दलों का दागियों पर भरोसा बढ़ता है तो यह अचरजपूर्ण नहीं है, लेकिन यह प्रवृत्ति लोकतंत्र के लिए अशुभ है। ध्यान देना होगा कि राजनीति के अपराधीकरण के लिए सिर्फ राजनीतिक दल ही जिम्मेदार नहीं हैं। इसके लिए जनता भी बराबर की गुनाहगार है। जब देश के आमजन साफ–सुथरे प्रतिनिधियों को चुनने के बजाए जात–पात व मजहब के आधार पर दागियों और बाहुबलियों को अपना नेतृत्व सौंपेगे तो दल उन्हें टिकट देंगे ही। नागरिक और मतदाता होने के नाते जनता की भी यह जिम्मेदारी बनती है कि वह ईमानदार, चरित्रवान, विवेकशील उम्मीदवारों को प्रतिनिधि चुने। चुनाव आयोग अपनी भूमिका निभा रहा है, मतदाताओं को भी अपना दायित्व समझना होगा।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

अंतरिक्ष में भी जय भारत, वैज्ञानिकों को बधाई

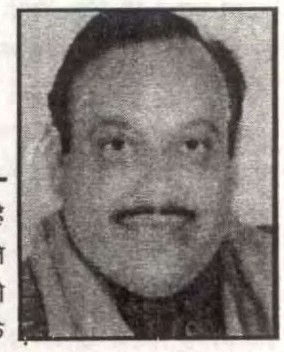

अखिल भारत हिन्दू महासभा ने वैज्ञानिकों को बधाई दी है क्योंकि देश के सामरिक और अंतरिक्ष क्षेत्र में बड़ी कामयाबी हासिल करते हुए भारत ने सैटेलाइट को मार गिराने वाली एंटी–सैटेलाइट मिसाइल की सफल लॉन्चिंग की है। भारतीय मिसाइल ने प्रक्षेपण के तीन मिनट के भीतर ही धरती की निचली कक्षा में ३०० किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थित लो अर्थ आर्बिट में एक सैटेलाइट को मार गिराया। इसके साथ ही अंतरिक्ष में मारक क्षमता हासिल करने वाले देशों की सूची में भारत भी शामिल हो गया। अब तक ऐसी शक्ति केवल अमेरिका, रूस और चीन के पास थी। एंटी सैटेलाइट (ए–सैट) के द्वारा भारत अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम को सुरक्षित रख सकेगा। इसरो व डीआरडीओ के संयुक्त प्रयास के द्वारा इस मिसाइल को विकसित किया गया है। इस बेहद जटिल तकनीकी परीक्षण और प्रोजेक्ट पर बीते करीब छह महीनों से ३०० वैज्ञानिक काम कर रहे थे। लो अर्थ आर्बिट धरती के सबसे पास वाली कक्षा होती है। यह धरती से २००० किमी ऊपर होती है। इस कक्षा में ज्यादातर टेलीकम्युनिकेशन सैटेलाइट्स को रखा जाता है। मिशन शक्ति की जरूरत क्यों पड़ी, इसका जवाब जानने के लिए यह ज्ञात होना चाहिए कि भविष्य में युद्ध अलग तरह से लड़ा जाएगा और वही जीतेगा जिसे तकनीक और प्रौद्योगिकी महारत हासिल होगी। आने वाले समय में युद्ध जमीन के साथ स्पेस में भी लड़ा जाएगा। दुनिया के सभी युद्ध विश्लेषक और रणनीतिकार इस मसले पर एक मत हैं कि भविष्य में वही विश्व पर हुकूमत करेगा जिसके जखीरे में स्पेस वार जीतने के ब्रह्मास्त्र होंगे। आने वाले दिनों के युद्ध तोप और बंदूकों के बल पर न तो लड़े जाएंगे और न ही जीते जा सकेंगे। इसमें जीत हासिल करने के लिए अंतरिक्ष युद्ध की सामर्थ्य विकसित करनी होगी। भारत ने इस दिशा में पहला लेकिन प्रभावी कदम बढ़ा दिया है और दुनिया में ऐसी उपलब्धि हासिल करने वाले चार देशों के क्लब में शामिल हो चुका है। धरती की निचली कक्षा में गतिमान किसी सैटेलाइट को पृथ्वी से निशाना बनाना एक असाध्य काम है, लेकिन भारतीय रक्षा और अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) के वैज्ञानिकों ने दिन रात एक करके इसे कर दिखाया। अभी तक भारत ने चंद्रमा व मंगल मिशनों के अलावा लंबी दूरी की मिसाइलें विकसित कर परचम लहराया है। दुनिया इसके किफायती और सटीक अंतरिक्ष कार्यक्रमों से चकित है। मिशन शक्ति के तहत कक्षा में घूम रहे सैटेलाइट को धरती से निशाना बनाना इसलिए भी बड़ी उपलब्धि है क्योंकि अधिकतर देश समस्त गतिविधि सैटेलाइट केंद्रित कर चुके हैं। संचार, जीपीएस, नेवीगेशन, सैन्य, मौसम एवं वित्त सहित आम जीवन से जुड़ी मनोरंजन के टेलीविजन चैनल्स, बिजली आदि तमाम चीजें कहीं न कहीं सैटेलाइट से ही नियंत्रित होने लगी हैं। ऐसे में अगर दुश्मन देश के सैटेलाइट को नेस्तनाबूद कर दिया जाए तो एक तरह से उस पर संपूर्ण काबू हो जाएगा। वह बेबस हो जाएगा। उसके सारे गुप्त कोड लॉक हो जाएंगे। आपातकाल में मिसाइल जैसी चीज का भी इस्तेमाल नहीं कर पाएगा। लड़ाकू विमान और युद्ध पोत खड़े रह जाएंगे। भारत ने मिशन शक्ति से न केवल सैटेलाइट को मार गिराने की विधि विकसित की, बल्कि बैलिस्टिक मिसाइलों को पकड़ने (इंटरसेप्ट) वाली तकनीक का इससे आधार भी तैयार किया है। अंतरिक्ष में भारत के दबदबे को बनाने और अंतरिक्ष में देश की संपदा को सुरक्षित रखने के लिए इस आपरेशन को अंजाम दिया गया है। इस बड़ी कामयाबी के पीछे देश के वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत है। अग्नि ५ मिसाइल के सफल परीक्षण के समय ही कई विशेषज्ञों ने यह संभावना जता दी थी कि भारत के पास अंतरिक्ष में मार करने की क्षमता है। लेकिन, उस समय आधिकारिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की गई थी, अंतरराष्ट्रीय पाबंदियों और जिम्मेदार देश होने के कारण भारत ने पहले इस क्षमता को हासिल होने के बारे में कोई पुष्टि नहीं की थी। अमेरिका का अधिकतर संचार सैटेलाइट के जरिए ही होता है, जिससे वह अंतरिक्ष में अमेरिकी सैटेलाइटों को निशाना बनाकर उसे हरा सकता है। अब भारत द्वारा एंटी मिसाइल टेस्ट के बाद किसी अंतरिक्ष युद्ध की स्थिति में अंतरिक्ष में काफी मदद मिलेगी। विशेषज्ञों के अनुसार अगर हमारी किसी भी सैटेलाइट को नुकसान हुआ तो अब हमारे पास भी आपकी सैटेलाइट को गिराने की क्षमता है। इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गनाइजेशन यानी इसरो के पूर्व चेयरमैन जी माधवन नायर ने कहा कि भारत के पास एक दशक से भी पहले भी एंटी सैटेलाइट मिसाइल क्षमता थी, लेकिन उस समय राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के कारण इसे सफलतापूर्वक अंजाम नहीं दिया जा सका। बहरहाल, मिशन शक्ति दुर्लभ और बेहद खतरनाक परीक्षण था। इतनी ऊंचाई पर किसी सैटेलाइट को मार गिराना आसान काम नहीं है, क्योंकि सैटेलाइट बेहद तेज गति से, यानी सैकड़ों किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रहा होता है और इतने छोटे लक्ष्य को सटीकता से भेद पाना बड़ी चुनौती होता है। यह बंदूक से निकली गोली को ३०० किमी की दूरी पर दूसरी गोली से भेदने जैसा है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

जानिए अंगूर खाने के फायदे

✍ उत्तमचंद माहेश्वरी

कहते हैं कि अंगूर का उत्पादन सबसे पहले करीब छह हजार साल पहले यूरोप में हुआ था। फ्रांसीसियों के साथ अमेरिका पहुँचे जहाँ बाद में इसका प्रयोग वाइन बनाने के लिए किया जाने लगा। यह एक बलवर्धक एवं सौन्दर्यवर्धक फल है। इसमें माँ के दूध के समान पोषक तत्व पाए जाते हैं। फलों में अंगूर सर्वोत्तम माना जाता है। यह निर्बल–सबल स्वस्थ–अस्वस्थ आदि सभी के लिए समान उपयोगी होता है। आइये जानते हैं इसके और महत्त्वपूर्ण उपयोग–

अंगूर के फायदे

❖ अंगूर के नन्हे–नन्हे दाने बड़ी खूबियों से भरे होते हैं। अंगूर में पॉली–फनोलिक फाइटोकेमिकल कंपाउंड पाए जाते हैं। ये एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर को न केवल कैंसर से बल्कि कोरोनरी हार्ट डिजीज नर्व डिजीज, अल्जाइमर व वाइरल तथा फंगल इन्फेक्शन से लड़ने की क्षमता प्रदान करते हैं।

❖ अंगूर में मिलने वाले पोषक तत्व हमारे पूरे शरीर के लिए बहुत फायदेमंद रहते हैं। अंगूर में सीमित मात्रा में कैलोरी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, सोडियम,

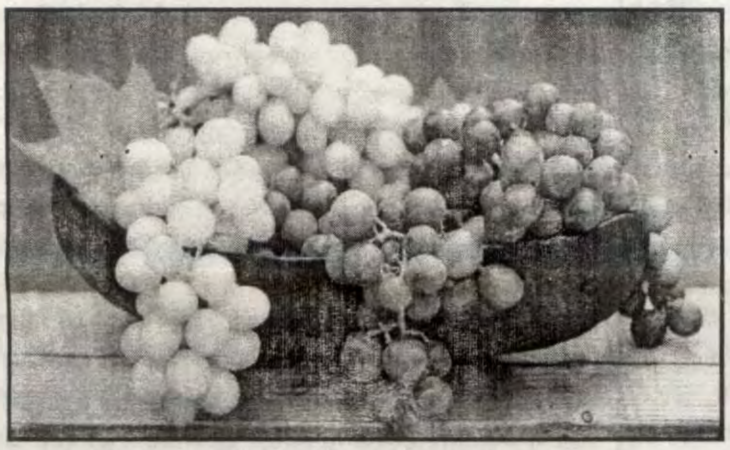

फाइबर, विटामिन ए, सी, ई व के, कैल्शियम, कॉपर, मैग्नीशियम, मैग्नीज, जिंक और आयरन भी मिलता है।

❖ शरीर के किसी भी भाग से रक्त स्राव होने पर अंगूर के एक गिलास जूस में दो चम्मच शहद घोलकर पिलाने पर रक्त की कमी को पूरा किया जा सकता है जिसकी कि रक्तस्राव के समय क्षति हुई है।

❖ अंगूर का गूदा "ग्लूकोज व शर्करा युक्त" होता है। विटामिन ए पर्याप्त मात्रा में होने से अंगूर का सेवन भूख बढ़ाता है। पाचन शक्ति ठीक रखता है, आँखों, बालों एवं त्वचा को चमकदार बनाता है।

❖ हार्ट–अटैक से बचने के लिए काले अंगूर का रस की गोली के समान कारगर है। एसप्रिन खून के थक्के नहीं बनने देती है। काले अंगूर के रस में फलोवोनाइडस नामक तत्व होते हैं और यह भी यही कार्य करता है।

❖ मुख में कड़वापन होने पर अंगूर या किशमिश को काला नमक के साथ खाने से भूख का स्वाद ठीक होता है।

❖ अंगूर फोड़े–फुंसियों एवं मुहासों को सुखाने में सहायता करता है। अंगूर के रस के गरारे करने से मुँह के घावों पर छालों में राहत मिलती है।

❖ एनीमिया में अंगूर से बढ़कर कोई दवा नहीं है। उल्टी आने व जी मिचलाने पर अंगूर पर थोड़ा नमक व काली मिर्च डालकर सेवन करें।

❖ पेट की गर्मी शांत करने के लिए २०–२५ अंगूर रात को पानी में भिगो दें तथा सुबह मसल कर निचोड़ें तथा इस रस में थोड़ी शक्कर मिलाकर पीना चाहिए।

❖ भोजन के आधा घंटे बाद अंगूर का रस पीने से खून बढ़ता है और कुछ ही दिनों में पेट फूलना, बदहजमी आदि बीमारियों से छुटकारा मिलता है।

❖ बुखार में प्यास अधिक होती हो और पानी पीने से शांत नहीं हो तो ऐसे में काली मिर्च और नमक के साथ मुनक्का देने से प्यास रूक जाती है।

❖ कब्ज की पुरानी शिकायत होने पर मुनक्का या अंगूर खाकर दूध पी लें लाभ होगा।

❖ शारीरिक शेष पृष्ठ 11 पर

आँवला

खूनी बवासीर : सूखे आँवले को बारीक पीसकर एक चाय चम्मच सुबह–शाम दो बार छाछ या गाय के दूध से लेने से खूनी बवासीर में लाभ होता है।

श्वेत प्रदर–(१) तीन ग्राम पिसा हुआ (चूर्ण) आँवला, ६ ग्राम शहद में मिलाकर नित्य एक बार ३० दिन लेने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है। परहेज खटाई का रखें। (२) बीस ग्राम आँवले का रस शहद में मिलाकर एक माह लगातार पीने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

कुष्ट : एक चम्मच आँवले के चूर्ण की सुबह–शाम फंकी लें।

पेशाब की जलन : हरे आँवले का रस एक छटांक, शक्कर या शहद आधा छटांक थोड़ा पानी मिलाकर सुबह–शाम पीयें। यह एक खुरा का तोल है। इससे पेशाब खुलकर आएगा। जलन और कब्ज ठीक होगी। शीघ्रपतन दूर होगा।

मधुमेह : ताजे आँवलों के रस में शहद मिलाकर पीने से मधुमेह ठीक हो जाता है।

कब्ज : रात को एक चम्मच पिसा हुआ आँवला पानी या दूध से लेने से सुबह दस्त साफ आता है। कब्ज नहीं रहती।

दस्त : सूखा आँवला और काला नमक समान मात्रा में पीसकर जल के साथ आधा चम्मच लेने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

रक्तक्षीणता : रक्तक्षीणता में आधा कप आँवले के रस में दो चम्मच शहद, थोड़ा–सा पानी मिलाकर पीने से लाभ होता है।

पांचन शक्तिवर्धक : खाने क

बाद एक चम्मच सूखे आँवले के चूर्ण की फंकी लेने से पाचन शक्ति बढ़ती है, मल बंधकर आता है।

स्मरणशक्ति बढ़ाने : नित्य प्रातः आँवले का मुरब्बा खायें।

नेत्र : शक्तिवर्धक–आँवले के सेवन से आँखों की दृष्टि बढ़ती है। पाव भर पानी में ६ ग्राम सूखा आँवला रात को भिगो दें। प्रातः इस पानी को छानकर आँख धोयें। इससे आँखों के सब रोग दूर होते हैं और दृष्टि बढ़ती है। सूखे आँवले के चूर्ण की एक चाय की चम्मच की फंकी रात को पानी से लें।

हृदय रोग : (१) पिसा हुआ आँवला दूध के साथ पीने से हृदय के सारे रोग दूर हो जाते हैं। (२) सूखा आँवला और मिश्री समान भाग पीस लें। इसकी एक चाय की चम्मच की फंकी नित्य पानी से लेने से हृदय के सारे रोग दूर हो जाते हैं। (३) आँवले का मुरब्बा दूध के साथ लेने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है व किसी प्रकार के हृदय–विकार नहीं होते।

गर्भिणी की कै : यदि गर्भावस्था में कै, उल्टी होती हो तो मुरब्बे के आँवले दो–दो नित्य चार बार खिलाने से बंद हो जाएगी।

खसरा की जलन : खसरा निकलने के बाद शरीर में जलन, खुजली हो तो सूखे आँवलों को पानी में उबालकर ठंडा होने पर नित्य शरीर धोयें। खुजली, जलन दूर हो जाएगी।

बाल गिरना : सूखे आँवले को रात को भिगो दें। प्रातः इस पानी से सिर धोयें। इससे बालों की जड़ें मजबूत होती हैं। बालों की प्राकृतिक सुंदरता बढ़ती है। फरास जमना ठीक हो जाता है। मस्तिष्क और नेत्र को लाभ पहुँचता है। मेंहदी और सूखा आँवला पीसकर पानी में गूँथ कर लगाने से बाल काले हो जाते हैं।

दोहा-दरबार

परम धन्य वह भूमि है, परम धन्य वह देश।
जिस पर आते हैं स्वयं ब्रह्मा–विष्णु–महेश।।
महिमण्डलमय मुद्रिका में अतिरत्न–समान।
भ्राजमान भारत सदा वन्दनीय महिमान।।
राष्ट्रदेव की अर्चना करते हैं जो लोग।
उनको होते हैं सुलभ स्वयं स्वर्ग के भोग।।
नहीं किसी से राग है, नहीं किसी से द्वेष।
अखिल लोक में सर्वदा भारत देश विशेष।।
राष्ट्रधर्म ही है सदा राष्ट्र–देश का प्राण।
राष्ट्रधर्म के वर्ग–बिन नहीं राष्ट्र का त्राण।।
मानवता का सहज ही हुआ जहाँ उत्कर्ष।
इसी पुरातन देश को कहते भारतवर्ष।।
हिम–किरीट शिर पर धरे शोभित भारत देश।
शरणागत जन के सदा हरता है सब क्लेश।।
चाहे कोई देश हो, नर हो या कि नरेश।
काटे बिन कटता नहीं कभी किसी का क्लेश।।
महाप्रलय में भी नहीं जिसका हुआ निदान।
वह ही पावन भूमि है भारतवर्ष महान।।
किया जिन्होंने देश–हित तन–मन–जीवन दान।
गूँज रहा है लोक में उनका गौरव–गान।।
राष्ट्रभक्ति जिसमें नहीं और नहीं प्रिय देश।
काटे कट सकता नहीं उसका कोई क्लेश।।
देशभक्ति से ही रहे स्वाभिमान–सम्मान।
देशभक्ति के देव हैं सैनिक वीर जवान।।
स्वर्ग उतारे आरती, देव करें गुण–गान।
ऐसा भारत देश है जग में मान्य महान।।
मस्तक का चन्दन बनी जिस धरती की धूल।
ऐसे भारत देश को कौन सकेगा भूल।।
जो जन करते देश औ, मातृभूमि से प्यार।
भारत माँ उन सुतों पर होती है बलिहार।।
सभी सुखी हों, स्वस्थ हों, रहे न कोई क्लेश।
सदा यही शुभकामना करता भारतदेश।।

आचार्य भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

रामनवमी पर विशेष

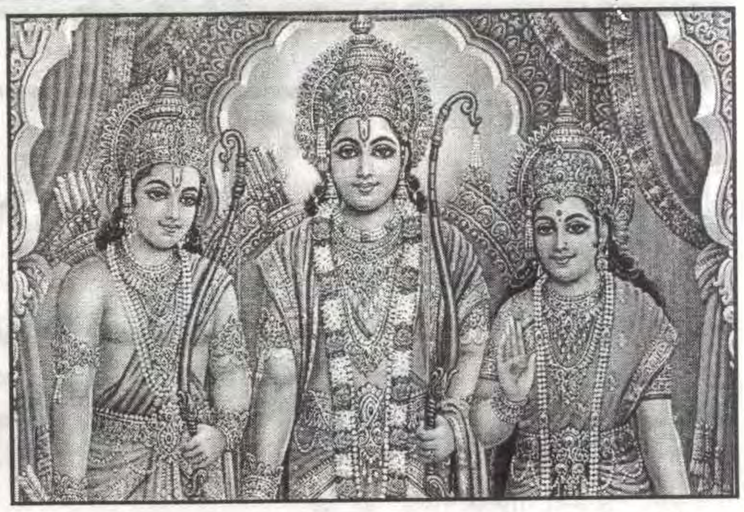

रामनवमी एक ऐसा पर्व है जिसपर चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को प्रतिवर्ष नये विक्रम संवत्सर का प्रारंभ होता है और उसके आठ दिन बाद ही चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी को एक पर्व राम जन्मोत्सव का जिसे रामनवमी के नाम से जाना जाता है, समस्त देश में मनाया जाता है। इस देश की राम और कृष्ण दो ऐसी महिमाशाली विभूतियाँ रही हैं जिनका अमिट प्रभाव समूचे भारत के जनमानस पर सदियों से अनवरत चला आ रहा है।

रामनवमी, भगवान राम की स्मृति को समर्पित है। राम सदाचार के प्रतीक हैं, और इन्हें **मर्यादा पुरुषोतम** कहा जाता है। रामनवमी को राम के जन्मदिन की स्मृति में मनाया जाता है। राम को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है, जो पृथ्वी पर अजेय रावण (मनुष्य रूप में असुर राजा) से युद्ध लड़ने के लिए आए। राम राज्य (राम का शासन) शांति व समृद्धि की अवधि का पर्यायवाची बन गया है। रामनवमी के दिन, श्रद्धालु बड़ी संख्या में उनके जन्मोत्सव को मनाने के लिए राम जी की मूर्तियों को पालने में झुलाते हैं। इस महान राजा की काव्य तुलसी रामायण में राम की कहानी का वर्णन है।

मर्यादा पुरुषोत्तम

भगवान विष्णु ने राम रूप में असुरों का संहार करने के लिए पृथ्वी पर अवतार लिया और जीवन में मर्यादा का पालन करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। आज भी मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्मोत्सव तो धूमधाम से मनाया जाता है पर उनके आदर्शों को जीवन में नहीं उतारा जाता। अयोध्या के राजकुमार होते हुए भी भगवान राम अपने पिता के वचनों को पूरा करने के लिए संपूर्ण वैभव को त्याग १४ वर्ष के लिए वन चले गए और आज देखें तो वैभव की लालसा में ही पुत्र अपने माता–पिता का काल बन रहा है।

राम का जन्म

पुरुषोत्तम भगवान राम का जन्म चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को पुनर्वसु नक्षत्र तथा कर्क लग्न में कौशल्या की कोख से हुआ था। यह दिन भारतीय जीवन में पुण्य पर्व माना जाता हैं। इस दिन सरयू नदी में स्नान करके लोग पुण्य लाभ कमाते हैं।

अगस्त्यसंहिता के अनुसार
मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रवहुसु दशरथ अजिर बिहारि।।

अगस्त्यसंहिता के अनुसार चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी, के दिन पुनर्वसु नक्षत्र, कर्कलग्न में जब सूर्य अन्याय पाँच ग्रहों की शुभ दृष्टि के साथ मेष राशि पर विराजमान थे, तभी साक्षात् भगवान् श्रीराम का माता कौशल्या के गर्भ से जन्म हुआ।

धार्मिक दृष्टि से चैत्र शुक्ल नवमी का विशेष महत्व है। त्रेता युग में चैत्र शुक्ल नवमी के दिन रघुकुल शिरोमणि महाराज दशरथ एवं महारानी कौशल्या के यहाँ अखिल ब्रह्माण्ड नायक अखिलेश ने पुत्र के रूप में जन्म लिया था। राम का जन्म दिन के बारह बजे हुआ था, जैसे ही सौंदर्य निकेतन, शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किए हुए चतुर्भुजधारी श्रीराम प्रकट हुए तो माता कौशल्या उन्हें देखकर विस्मित हो गई। राम के सौंदर्य व तेज को देखकर उनके नेत्र तृप्त नहीं हो रहे थे। देवलोक भी अवध के सामने श्रीराम के जन्मोत्सव को देखकर फीका लग रहा था। जन्मोत्सव में देवता, ऋषि, किन्नर, चारण सभी शामिल होकर आनंद उठा रहे थे। हम प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल नवमी को राम जन्मोत्सव मनाते हैं और राममय होकर कीर्तन, भजन, कथा आदि में रम जाते हैं। रामनवमी के दिन ही गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना का श्रीगणेश किया था।

रामनवमी की पूजा

हिन्दू धर्म में रामनवमी के दिन पूजा की जाती है। रामनवमी की पूजा के लिए आवश्यक सामग्री रोली, ऐपन, चावल, जल, फूल, एक घंटी और एक शंख हैं। पूजा के बाद परिवार की सबसे छोटी महिला सदस्य परिवार के सभी सदस्यों को टीका लगाती है। रामनवमी की पूजा में पहले देवताओं पर जल, रोली और ऐपन चढ़ाया जाता है, इसके बाद मूर्तियों पर मुट्ठी भरके चावल चढ़ाये जाते हैं। पूजा के बाद आरती की जाती है और आरती के बाद गंगाजल अथवा सादा जल एकत्रित हुए सभी जनों पर छिड़का जाता है।

रामनवमी व्रत

रामनवमी के दिन जो व्यक्ति पूरे दिन उपवास रखकर भगवान श्रीराम की पूजा करता है, तथा अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार दान–पुण्य करता है, वह अनेक जन्मों के पापों को भस्म करने में समर्थ होता है। विधि रामनवमी का व्रत महिलाओं के द्वारा किया जाता है। इस दिन व्रत करने वाली महिला को प्रातः सुबह उठना चाहिए। घर की साफ–सफाई कर घर में गंगाजल

शेष पृष्ठ 10 पर

राम नवमी (14 अप्रैल 2019 ई०)

त्रेता युग के संक्रमण काल में, चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में नवमी तिथि को दोपहर 12.00 बजे अयोध्या नगरी में राम जन्म हुआ था।

1. हिन्दू धर्म में मान्यता है कि श्री राम भगवान विष्णु के दसवें अवतार हैं।
2. आर्य समाज में इन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के रूप में माना जाता है।
3. आपकी पूजा–आराधना शहरों–कस्बों–गांवों तथा विदेशों में सर्वत्र होती है, और अभिवादन में राम–राम, जय श्री राम, जय राम जी की, सीता राम जैसे वाक्यों का प्रचलन काफी है।
4. स्थान–स्थान पर प्रतिवर्ष रामलीलाएँ होती हैं। रामलीला मैदान भी कई स्थान पर हैं। दशहरा और दीपावली पर्व भी आपसे ही सम्बन्धित हैं।
5. अयोध्या के भव्य मन्दिर को मुगल शासक बाबर ने तुड़वाकर उसके मलवे से उसी स्थान पर मस्जिद जैसी इमारत बनवा दी थी।
6. हिन्दू समाज मन्दिर को विकृत करने से आक्रोश में रहा। उसने 1528 से 1947 तक इसे पुनः प्राप्त करने का 76 बार प्रयास किया, असफल रहा।
7. स्वतंत्र भारत के संविधान में विकृत किए गए–तोड़े गए मन्दिरों के पुनर्निर्माण–जीर्णोद्धार करने का कोई प्रावधान ही नहीं हैं।
8. राम भक्त होते हुए यदि गांधीजी विशेष रुचि लेते तो यह स्थान हिन्दुओं को देश स्वतन्त्र होते ही मिल सकता था।
9. पिछले वर्ष उच्च न्यायालय ने जो निर्णय दिया था उसके विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय में अपील की हुई है।
10. हमारी मांग है कि विवादित क्षेत्र का बंटवारा न हो बल्कि पूरा क्षेत्र हिन्दुओं को मिले ताकि वहां भव्य राम मन्दिर पुनः बने।
11. श्रीराम से सम्बन्धित आस्था साहित्य विश्व की अनेक भाषाओं में हैं।
12. मलेशिया एक इस्लामी राष्ट्र है लेकिन वहां का शासक श्री राम को आदर्श मान कर शपथ ग्रहण करता है।

13. इण्डोनेशिया में श्री राम को लोकनायक के रूप में स्वीकार किया जाता है और वहां के साहित्य एवं नृत्यकला में राम कथा का बहुत महत्त्व है।
14. म्यांमार में अयोध्या नामक एक नगर है। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार म्यांमार की प्राचीन राजधानी अयोध्या थी।
15. श्री लंका सरकार के द्वारा श्री राम और रावण के सम्बन्ध में अनुसंधात्मक कार्य किया गया है। वहां का पुरातत्त्व विभाग यह सिद्ध कर चुका है कि श्री राम और रावण के मध्य युद्ध हुआ था।
16. मध्यएशिया के प्राचीन साहित्य में भी श्री राम को वन्दनीय महापुरुष के रूप में चित्रित किया गया है।

इन्द्र देव गुलाटी

देवभूमि कश्मीर का अहिंदुकरण

विनोद कुमार सर्वोदय

१९४७ की शरणार्थी समस्या : हिन्दुओं के लिये स्वर्ग कहलाने वाली देवभूमि जम्मू–कश्मीर में देश विभाजन के समय १९४७ में पाकिस्तान से प्रताड़ित होकर आये हिन्दू शरणार्थी जो सीमान्त क्षेत्रो में रह रहें है, को भारत के नागरिक होने के उपरान्त भी वहां की नागरिकता से ७० वर्ष बाद भी वंचित किया हुआ है। जिस कारण उनको राशन व आधार कार्ड, गैस कनेक्शन, सरकारी नौकरी, राज्य में स्थानीय चुनावों व उच्च शिक्षा, संम्पति का क्रय–विक्रय आदि से वंचित होना पड़ रहा है। जबकि १९४७ में यहां से पाकिस्तान गये हुए मुसलमानों को वापस बुला कर पुनः ससम्मान जम्मू–कश्मीर में बसाया जा रहा है। समाचारों के अनुसार विभाजन के समय लगभग २ लाख शरणार्थी लगभग (३७००० परिवार) जम्मू व घाटी में आकर बसे थे जो अब अखनूर, जम्मू, आरएस पुरा, बिश्नाह, सांबा, हीरानगर तथा कठुआ आदि के सीमान्त क्षेत्रो में रह रहें है। इनकी चार पीढियां हो चुकी है और संख्या भी अब कई लाखों में होगी फिर भी ये अभी शरणार्थी जीवन का दंश झेल रहें है। इनमें अधिकाँश दलित, अनुसूचित जाति व पिछड़ा वर्ग के हिन्दू–सिख है। ये अभी तक जम्मु–कश्मीर राज्य के नागरिक नही है, क्योंकि १९५३ में राज्य सरकार ने निर्वाचन कानून में एक संशोधन किया था जिसके अनुसार जम्मू–कश्मीर की विधान सभा में वही मतदाता होगा जो वहां का स्थायी नागरिक होगा और स्थायी नागरिक वही होगा जो १९४४ से पहले राजा हरिसिंह के राज्य की प्रजा होगी। अर्थात इस राज्य में जो १९४४ के पहले से रह रहा है वही वहां का स्थायी नागरिक कहलायेगा। इसके पीछे वहां के तत्कालीन प्रधानमंत्री (उस समय वहां मुख्यमंत्री नहीं होता था) शेख अब्दुल्ला की हिन्दू विरोधी मानसिकता थी क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि इन हिंदू शरणार्थियों को यहां बसाया जायें। जबकि १९४८ में मध्य एशिया से आये मुस्लिम समुदाय को वहां बसाया गया और उन्हें नागरिकता भी दी गयी। पश्चिमी पाकिस्तान रियूजी संघर्ष समिति के पदाधिकारी निरंतर भारत सरकार से अपनी समस्याओं के लिए चक्कर काटते रहें है फिर भी अभी तक कोई समाधान नही हो पा रहा है। लगभग ढाई वष पूर्व समिति के अध्यक्ष श्री लब्बा राम गांधी को प्रधानमंत्री मोदी, गृहमंत्री राजनाथ सिंह व बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह आदि ने आश्वासन दिया था कि इनकी समस्याओं का शीघ्र हल निकाला जायेगा, पर अभी तक कोई समाधान नहीं हुआ है। विश्व मे नागरिको के मुलभूत मौलिक मानवीय अधिकारों के हनन की संभवतः यह एकमात्र त्रासदी हो।

देवभूमि कश्मीर का अहिंदुकरण : वर्ष १९९० में १९ जनवरी की वह काली भयानक रात, वहां के हिन्दुओं के लिए मौत का मंजर बन गयी थी। वहां की मस्जिदों से ऐलान हो रहा था कि हिंदुओं कश्मीर छोडो। उनके घरों को लूटा जा रहा था, जलाया जा रहा था, उनकी बहन–बेटियों के बलात्कार हो रहें थे, प्रतिरोध करने पर कत्ल किये जा रहें थे। मुगल काल की बर्बरता का इतिहास दोहराया जा रहा था। देश की प्रजा कश्मीरी हिन्दुओ को अपनी ही मातृभूमि (कश्मीर) में इन धर्मांधों की घिनौनी जिहादी मानसिकता का शिकार बनाया जा रहा था। उस समय सौ करोड़ हिन्दुओं का देश व लाखों की पराक्रमी सेना अपने ही बंधुओं को काल के ग्रास से बचाने में असमर्थ हो रही थी। भारतीय संविधान ने भी अपने नागरिकों की सुरक्षा का दायित्व नहीं निभाया, क्यों..? क्या उनका स्वतंत्रता, समानता और स्वाभिमान से जीने का मौलिक व संवैधानिक अधिकार नही? क्या मुस्लिम वोटों से सत्ता की चाहत ने तत्कालीन शासको को अंधा व बहरा कर दिया था कि जो उन्हें कश्मीरी हिन्दुओं का बहता लहू दिखाई नहीं दिया और न ही रोते–बिलखते निर्दोषो व मासूमों की चीत्कार सुनाई दी? परिणाम सबके सामने है सैकड़ो–हजारों का धर्म के नाम पर रक्त बहा, लगभग ५ लाख हिन्दुओं को वहां से पलायन करना पड़ा और य

लुटे–पिटे भारतीय नागरिक जगह–जगह भटकने को विवश हो गये। सरकारी व सामाजिक सहानुभूति पर आश्रित विस्थापित समाज इस आत्मग्लानि में कब तक जी सकेगा? स्वाभिमान व अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए बच्चे आज युवा हो गये जबकि युवाओं के बालो की सफेदी ने उनको बुजुर्ग बना दिया। छोटे–छोटे शिविरों में रहने वाले अनेक कश्मीरी परिवारों में जन्म दर घटने से उनके वंश ही धीरे धीरे लुप्त हो रहें है।

इस मानवीय धर्मांध त्रासदी की पिछले २७ वर्षो से यथास्थिति के इस इतिहास पर तथाकथित मानवाधिकारियों व धर्म निरपेक्ष वादियों का उदासीन रहना क्या इसके उत्तरदायी कट्टरवादी मुस्लिमो को प्रोत्साहित नहीं कर रहा है? निजामे–मुस्तफा की स्थापना की महत्वाकांक्षा मुस्लिम समुदाय के जिहादी दर्शन का एक विशिष्ट अध्याय है। ऐसी विकट परिस्थितियों में हिंदुओं को वहां पुनः बसा कर उनके सामान्य जीवन को सुरक्षित करने का आश्वासन कैसे दे सकते है? यह भी सोचना होगा कि विभाजनकारी अस्थायी अनुच्छेद ३७० के रहते उनको पुनः वहां बसा कर जिहादी जनुनियो के कोप का भाजन बनने देना क्या उचित होगा? जबकि आज वहां की बीजेपी–पीडीपी गठबंधन सरकार धीरे धीरे सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून (अफस्पा) को हटाने की ओर बढ़ रही है और कुछ स्थानों से सुरक्षाबलो को भी हटाना आरम्भ किया जा चुका है। आज यह सोचना होगा कि कश्मीर में हिन्दू रहेगा का ज्वलंत प्रश्न तो है ही पर क्या कश्मीर में भारत रहेगा या नही?

विस्थापित कश्मीरी हिन्दुओं की वापसी : आज कश्मीर के विस्थापित हिंदुओं में कश्मीरी हिन्दू या कश्मीरी पंडित की भावना से बाहर निकाल कर भारतीय हिन्दू या हिन्दू–हिन्दू सब एक का संगठनात्मक भाव बनाने की भी परम आवश्यकता है। यह सत्य है कि धर्म के कारण जो भयानक पीड़ा कश्मीरी हिंदू सह रहे है उससे उनकी एक अलग पहचान बन चुकी है। परंतु अगर हम सब अपने को प्रदेश वाद से जोड़कर कोई हिमाचली, पंजाबी, बिहारी, मराठी, गुजराती, बंगाली, मद्रासी आदि में बाट कर देखने लगेंगे तो यह एक बहुत बड़ा आत्मघाती कदम होगा। अतः विस्थापित कश्मीरी हिंदुओं के दर्द से द्रवित होने वाले सभी हिंदुओं के समर्थन से चलने वाले आंदोलनो को राज्यस्तरीय विभाजन से भी बचाना होगा। लेकिन यह झुठलाया नहीं जा सकता कि कश्मीरी हिंदुओं की त्रासदी हमारे लिए एक बहुत बड़ी जीवंत चुनौती है। पुरे देश में जगह जगह बनने वाली मुस्लिम बस्तियों के बढ़ने से मिनी पाकिस्तान का बनना हम सभी को कश्मीर के भयंकर संकट का अभास करा रहा है। अतः य मुस्लिम जिहाद केवल कश्मीरी हिंदुओं का ही नहीं पुरे भारत के हिन्दुओ की आस्थाओं व अस्तित्व पर भी भारी संकट है। सभी अलग अलग राज्यों में रहने वाले हिन्दू आपस में एकजुट है तभी संगठित शक्ति प्रदर्शन से ही हम विस्थापितों की समस्या को हल कर सकते है व भविष्य में बढ़ते जिहाद को रोकने की सामर्थ जुटा सकेगें। यह भी विचार किया जा सकता है कि विस्थापित हिंदुओं का पूरे भारत पर उतना ही अधिकार है जितना अन्य किसी हिन्दू का अतः यह कहना कहा तक उचित है कि कश्मीरियों को अलग होमलैंड देना चाहिए या वे अलग होमलैंड मांग रहे है। भारत के समस्त हिंदुओं को यह सोचना होगा कि अगर वे अपने अपने प्रदेशवासी या ग्रामवासी विचार के अहम को छोड़ कर एक हिन्दुत्वादी राष्ट्रीय विचारधारा को नहीं अपनाएंगे तो उनका संकट घटेगा नहीं उल्टा बढ़ेगा। क्योंकि इससे हम हिंदुओं की ही एकजुटता पर प्रश्नचिन्ह लग सकता है?

अतः कश्मीरी हिन्दुओं को पुनः कश्मीर में बसाने के लिये व पाकिस्तान से आये शरणार्थी हिन्दुओं को वहां के सामान्य नागरिक अधिकार दिलवाने के लिये अनेक कठोर उपाय करने होंगे। अलगाववादियों व आतंकवादियों के कश्मीर व पीओके आदि के सभी ठीकानों व प्रशिक्षण केंद्रों को नष्ट करना होगा। बंग्लादेशी,म्यंमा, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि के मुस्लिम घुसपैठियों व आतंकियों को कठोरता से बाहर निकालना होगा। वहां के आतंकियो के स्लीपिंग सेलो व ओवर ग्राउंड वर्कर्स को भी चिन्हित करके उनको बंदी बनाना होगा। यह भी ध्यान रहें कि जम्मू कश्मीर से जब तक अनुच्छेद ३७० नहीं हटाया जाता तब तक वहां से अफस्पा कानून व सेना को भी नहीं हटाया जाना चाहिये। इसके साथ साथ केंद्र सरकार को जम्मू–कश्मीर में प्रस्तावित सैनिक कालोनी व विस्थापित कश्मीरी हिंदुओं के लिए कालोनियों के निर्माण की योजनाओं को अविलंब आरम्भ करना चाहिये। साथ ही कश्मीर को भारत की मुख्य धारा में लाने के लिए व उसको अहिंदुकरण होने से बचाने के लिये संविधान का विवादित आत्मघाती अनुच्छेद ३७० को हटाने की केंद्र व राज्य सरकारों सहित सभी भारतीयों की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिये।

संवेदनाएँ दरक रही हैं, मानवता शर्मसार हो रही है

✍ श्यामसुंदर टावरी

सकारात्मक मनोवृत्ति का प्रवाह जीवन पोषक होता है, जबकि नकारात्मक मनोवृत्ति का प्रवाह जीवनशोषक है। जैसी हमारी संवेदना होगी वैसा परिणाम मिलेगा, संवेदनहीन नकारात्मक विचारसरणी का परिणाम घर के पश्चिम दिशा की खिड़की की तरह होता है जहाँ से कभी सूरज उगता ही नहीं।

(१) मनुष्य हत्या : एक के बाद एक हो रही है मनुष्य की हत्या। प्यार और युद्ध में सब जायज होता है। बेवफाई और धोखेबाजी से इन्सान की आँखों में खून सवार हो जाता है और हत्या को अंजाम देता है। एकतरफा प्यार, अपने साथी की बेवफाई, प्यार में धोखा, चरित्र पर संदेह, रिश्तों में संतुष्टि का अभाव, उम्मीद जितना प्यार और इज्जत नहीं मिलना, प्रॉपर्टी का विवाद तब इसकी तलाश में लोग अक्सर रिश्तों की लक्ष्मण रेखा पार कर लेते हैं। प्यार, अनैतिकता, संदेह का खौफनाक अंत होता है, देश में एक के बाद एक हो रही हत्याओं का सिलसिला यही बयां करता है कि भावनात्मक स्तर पर लोग इस तरह कमजोर हो गए हैं कि जिसके साथ जीने-मरने की कसम खाई, जिसके साथ संसार किया, जिसने जन्म दिया, जिसके साथ बचपन बीता उसी का गला घोंटने या चाकू से पेट फाड़कर आसुरी तृष्णा तृप्ति महसूस की जा रही है। टीवी द्वारा दिखाए जाने वाले फूहड़ प्रोग्राम, रिश्तों को तोड़-मरोड़कर पेश किए जाने वाले धारावाहिक, अनैतिक संबंधों को आधुनिकता की चाशनी में परोसने का प्रयास, फिल्मों में बाजारू कथा और आधुनिकता के नाम दर्शाने वाली उटपटांग प्रेम कहानियाँ तथा सोशल मीडिया के वाट्सअप, फेसबुक, यूट्यूब पर होने वाली पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का मिलाजुला असर यह हो रहा है कि हत्या को आसान हल समझा जा रहा है। मामूली विवाद पर हत्याओं का सिलसिला विगत कुछ समय में अधिक प्रमाण में देश में देखा जा रहा है।

(२) आत्महत्या : प्यार, अनैतिकता, संदेह, कर्ज के बोझ आदि का खौफनाक अंत आत्महत्या में हो रहा है। घरवालों की मर्जी की खातिर, प्रेमी द्वारा प्यार को टालने की खुन्नस खाकर मौत के घाट उतार रहा है। अपनी माशूका के शौक को पूरा करने रुपये नहीं मिलने पर या वैवाहिक संबंध न होने पर खुन्नस बढ़ जाती है। बीमारी से परेशान, पसंद की नौकरी नहीं मिलना, परीक्षा में अपेक्षित सफलता नहीं पाना भी अनेक वर्षों से आत्महत्या का कारण है। ऑनर किलिंग या प्रताड़ना से हत्या-आत्महत्या के मामले सामने आते हैं। हत्या-आत्महत्या का विकल्प आसान हो गया है। झूठी शान, प्रतिष्ठा, इज्जत जाने के डर से भी आत्महत्या करते हैं। उसे समझदारी आपस में संवाद समूपदेशन प्राप्त करने के बजाय क्षणिक आवेश में आत्महत्या को तत्पर हो जाते हैं। कानून का डर नहीं रहा। समाज का प्रभाव नहीं रहा। आत्महत्या के बाद पीछे रह गए माता-पिता, जीवनसाथी, बच्चे, भाई-बहन का क्या होगा इसकी चिंता नहीं करते। काश वे इस बारे में चिंतन-चिंता कर लेते तो आत्महत्या का वह क्षण टल जाता। एक बार वह घड़ी निकल जावे तो फिर आत्महत्या कर लेना सहज कार्य नहीं रह जाता। अब तो सामूहिक रूप से आत्महत्या-हत्याएँ होने लगी हैं उनकी मौत पर शोक व्यक्त करने वाला भी पीछे नहीं बचता।

पारंपरिक रूप से मजबूत वैयक्तिक और भावनात्मक संबंधों और सहिष्णुता वाले इस देश में मृत्यु की इच्छा इस कदर क्यों बढ़ते जा रही है? घर-परिवार, दोस्त-रिश्तेदार, दफ्तर-समाज और एक हँसती खिलखिलाती दुनिया में उम्मीदों की डोर थामे जिंदगी रोजमर्रा के जीवन में व्यस्त रहती है, फिर अचानक कुछ ऐसा क्या होता है, डोर टूट जाती है और जिंदगी शून्य हो जाती है।

(३) भीड़तंत्र में हत्या : देश में भीड़ के हाथों हत्या की घटनाएँ विगत वर्षों में जगह-जगह पर हो रही हैं। इसके स्तर में चिंताजनक वृद्धि की स्थिति में सरकार नया कानून बनाने पर विचार कर रही है। गौ तस्करों, जातीय मतभेद, संदेहास्पद स्थिति में भीड़ द्वारा हत्या की घटनाएँ, गुस्से में आकर किए जाने वाले कृत्य भीड़तंत्र का परिणाम है। सभी घटनाएँ पूर्वनियोजित नहीं होती। क्षणिक आवेश में भीड़ जमा कर नियंत्रण खो देती है। इसी की प्रतीक्षा में बैठे असामाजिक तत्व, पत्थर फेंकने, दुकानें जलाने, सरकारी सम्पत्तियाँ लूट में लग जाती हैं। अंतिम परिणाम आगजनी, हत्या में सामने आता है। अब ना जाने कैसा उन्माद आ गया है कि भीड़ अपने हाथों में कानून ले लेती है। जब तक भीड़तंत्र द्वारा सार्वजनिक सामाजिक सम्पत्तियों के नुकसान की भरपाई भीड़तंत्र के आयोजकों से नहीं कर लेती तब तक ऐसी घटनाएँ बढ़ने की संभावना अधिक है। तथापि लोकतंत्र के इस देश में वोट बैंक के खातिर गिरफ्तार किए गए असामाजिक तत्वों को भी मामला ठंडा होने पर कार्रवाई वापस ले लेती है। कैसे रहेगा डर।

(४) दुर्घटनाएँ : सड़क पर नित्य नियम से दुर्घटना होती है। चलती बहती सड़क पर सेंकडों हजारों लोग आ-जा रहे होते हैं। किन्तु दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति के प्रति संवेदनाओं के भाव लुप्त हो जाते हैं। हाँ, सेल्फी लेने वालों सेल्फिशों का जमावड़ा दूर से तड़पते, दम निकलते व्यक्ति को देखते रह जाते हैं। हमारी मानसिक संवेदनाएँ दरक रही हैं।

(५) अत्याचार-बलात्कार : बालिकाओं पर बलात्कार की घटनाएँ सतत बढ़ रही हैं। दो साल की नन्ही बच्ची भी सुरक्षित नहीं। अपनी राक्षसी वासना को शांत करने के बाद पीड़िता को बेदर्दी से हत्या भी कर देते हैं। अनेक प्रकरणों में तो नजदीकी रिश्तेदार या परिचित का हाथ होता है। गिद्ध की भाँति अवयस्क बच्चियों पर सामूहिक रूप से जोर-जबरदस्ती करते इन कुत्तों को शर्म भी नहीं आती। सामूहिक रूप से अत्याचार, छेड़छाड़ का घिनौना प्रकार हो रहा है। शिकायत लेने को भी प्रथमतः पुलिस तैयार नहीं होती। किससे सुरक्षा की अपेक्षा करें। पहले की दुनिया में एक रावण, एक कंस, एक दुर्योधन, एक शकुनि मामा होता था। अब तो ये गली-मुहल्लों में भी सहज मिल जाते हैं। भारत देश विश्वगुरु बनने की बात चल रही है। क्या इस क्षेत्र में भी पश्चिमी देशों से आगे जाना चाहता है। यह प्रश्न एक व्यक्ति, एक परिवार, एक समाज का नहीं। संपूर्ण देश के सदाचार, नीति, नियम, संस्कारों को सशक्त करना होगा। मानवता-इंसानियत को शिक्षण में तरजीह देनी होगी। नैतिक शिक्षा का पाठ देना होगा।

(६) कारण : उपरोक्त स्थिति को जानते हुए भी वर्तमान समय में हमारे परिवार क्लेश और द्वेष की ज्वाला में भस्म होते जा रहे हैं। कारण है हम अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं। हम जड़ों को पानी नहीं देते, उसके फूल-पत्ते डाली को सींच रहे हैं। हम अपनी प्राचीन संस्कृति, परंपराओं और संस्कारों से आधुनिकता की आँधी में हम खिसकते जा रहे हैं। छोटी-बड़ी बातों पर अप्रसन्न होकर प्रेम की डोर में बंधे सुखी परिवार छिन्न-भिन्न हो रहे हैं। एक समय था दादा-दादी की बगिया में माता-पिता, भाई-बहन, बेटे-बेटियों और पोते-पोतियों के समूह को परिवार कहा जाता था। अब एकल परिवार का प्रचलन हो गया है। उसमें बूढ़े माँ-बाप भी उपेक्षित होने लगे हैं, वे बोझ समझे जाने लगे हैं। स्वच्छंद-स्वतंत्र जीवन की चाहत बढ़ गई है। स्नेह, आत्मीयता, प्रेम से आत्मबल मिलता था। तनावग्रस्त नहीं होने से मानवीय संवेदनाएँ हमारे साथ बनी रहती हैं। छोटी बातों को भूलकर भविष्य की चिंता न कर वर्तमान को संभालना ही हमारे हाथ में है। उसे संभालो जिंदगी सुखी और खुशियों से भरी होगी।

(अ) निवारण : इतिहास के पन्नों में असुरक्षित और अशिक्षित समाज में परिस्थितिजन्य घटनाओं के कारण भीड़ को हिंसक होते देखा गया है। आज आए दिन किसी का किसी भीड़ द्वारा अफवाहों के सहारे मार देना आम बात हो गई है। भीड़ को हिंसक बनाने के पीछे दुष्ट मनोवृत्तियों का एवज जमा हो जाता है। उस भीड़ के आगे कानून बौना नजर आता है। इस पर शासन को खुफिया तंत्र मजबूत करना, समय पर तत्काल कार्रवाई कर दोषियों को शीघ्र कठोर दंड मिलना चाहिए। समाज का सांप्रदायीकरण कर सत्ता सुख प्राप्त करने की लालसा में आम लोगों के अन्दर कानून की अवहेलना की संस्कृति बो दी है। ऐसे पक्षों की मान्यता निर्वाचन आयोग को रद्द करनी चाहिए। तथा ऐसे लोगों को शासन से प्रत्यक्ष अपरोक्ष रूप से मिल रही सभी सहायता बंद करना चाहिए। अन्यथा अराजकता फैलते रहेगी, व्यवस्था चरमराती रहेगी, राष्ट्रीय सम्पत्ति को भारी क्षति पहुँचती रहेगी। जंगली संस्कृति की ओर बढ़ रहे समाज की, शासन तथा समाज से मिले हथियारों का उपयोग करना होगा। तीन माह में जाँच पूरी शेष पृष्ठ 11 पर

डॉ० भीमराव अम्बेडकर जयंती पर

डॉ० भीमराव अम्बेडकर को बाबासाहेब नाम से भी जाना जाता है। अम्बेडकर जी उनमें से एक है, जिन्होंने भारत के संविधान को बनाने में अपना योगदान दिया था। अम्बेडकर जी एक जाने माने राजनेता व प्रख्यात विधिवेत्ता थे। इन्होंने देश में से छुआ छूत, जातिवाद को मिटाने के लिए बहुत से आन्दोलन किये। इन्होंने अपना पूरा जीवन गरीबों को दे दिया, दलित व पिछड़ी जाति के हक के लिए इन्होंने कड़ी मेहनत की। आजादी के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरु के कैबिनेट में पहली बार अम्बेडकर जी को ला मिनिस्टर बनाया गया था। अपने अच्छे काम व देश के लिए बहुत कुछ करने के लिए अम्बेडकर जी को १९९० में देश के सबसे बड़े सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया।

आरंभिक जीवन : अम्बेडकर जी अपने माँ बाप की १४ वी संतान थे। उनके पिता इंडियन आर्मी में सूबेदार थे, व उनकी पोस्टिंग इंदौर के पास महू में थी, यही अम्बेडकर जी का जन्म हुआ। १८९४ में रिटायरमेंट के बाद उनका पूरा परिवार महाराष्ट्र के सतारा में शिफ्ट हो गया। कुछ दिनों के बाद उनकी माँ चल बसी, जिसके बाद उनके पिता ने दूसरी शादी कर ली, और बाम्बे शिफ्ट हो गए। जिसके बाद अम्बेडकर जी की पढाई यही बाम्बे में हुई, १९०६ में १५ साल की उम्र में उनका विवाह ९ साल की रमाबाई से हो गया। इसके बाद १९०८ में उन्होंने १२वी की परीक्षा पास की। छुआ छूत के बारे में अम्बेडकर जी ने बचपन से देखा था, वे हिन्दू मेहर कास्ट के थे, जिन्हें नीचा समझा जाता था व ऊँची कास्ट के लोग इन्हें छूना भी पाप समझते थे। इसी वजह से अम्बेडकर जी ने समाज में कई जगह भेदभाव का शिकार होना पड़ा। इस भेदभाव व निरादर का शिकार, अम्बेडकर जी को आर्मी स्कूल में भी होना पड़ा जहाँ वे पढ़ा करते थे, उनकी कास्ट के बच्चों को क्लास के अंदर तक बैठने नहीं दिया जाता था। टीचर तक उन पर ध्यान नहीं देते थे। यहाँ उनको पानी तक छूने नहीं दिया जाता था, स्कूल का चपरासी उनको उपर से डालकर पानी देता था, जिस दिन चपरासी नहीं आता था, उस दिन उन लोगों को पानी तक नहीं मिलता था। स्कूल की पढाई पूरी करने के बाद अम्बेडकर जी को आगे की पढाई के लिए बाम्बे के एल्फिनस्टोन कॉलेज जाने का मौका मिला, पढाई में वे बहुत अच्छे व तेज दिमाग के थे, उन्होंने सारे एग्जाम अच्छे से पास करे थे, इसलिए उन्हें बरोदा के गायकवाड के राजा सहयाजी से २५ रूपए की स्कॉलरशिप हर महीने मिलने लगी। उन्होंने राजनीती विज्ञान व अर्थशास्त्र में १९१२ में ग्रेजुएशन पूरा किया। उन्होंने अपने स्कॉलरशिप के पैसे को आगे की पढाई में लगाने की सोची और आगे की पढाई के लिए अमेरिका चले गए। अमेरिका से लौटने के बाद बरोदा के राजा ने उन्हें अपने राज्य में रक्षा मंत्री बना दिया। परन्तु यहाँ भी छुआछूत की बीमारी ने उनका पीछा नहीं छोड़ा, इतने बड़े पद में होते हुए भी उन्हें कई बार निरादर का सामना करना पड़ा।

बॉम्बे गवर्नर की मदद से वे बॉम्बे के सिन्ड्रोम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकोनोमिक्स में राजनैतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बन गए। अम्बेडकर जी आगे और पढ़ना चाहते थे, इसलिए वे एक बार फिर भारत से बाहर इंग्लैंड चले गए, इस बार उन्होंने अपने खर्चो का भार खुद उठाया। यहाँ लन्दन युनिवर्सिटी ने उन्हें डीएससी के अवार्ड से सम्मानित किया। अम्बेडकर जी ने कुछ समय जर्मनी की बोन यूनीवर्सिटी में गुजारा, यहाँ उन्होंने इकोनोमिक्स में अधिक अध्ययन किया। ८ जून १९२७ को कोलंबिया यूनीवर्सिटी में उन्हें Doctrate की बड़ी उपाधि से सम्मानित किया गया। अम्बेडकर जी की पत्नी रमाबाई की लम्बी बीमारी के चलते १९३५ में म्रत्यु हो गई थी। १९४० में भारतीय संविधान का ड्राफ्ट पूरा करने के बाद उन्हें बहुत सी बीमारियों ने घेर लिया। उन्हें रात को नींद नहीं आती थी, पैरों में दर्द व डायबटीज भी बढ़ गई थी, जिस वजह से उन्हें इन्सुलिन लेना पड़ता था। इलाज के लिए वे बाम्बे गए जहाँ उनकी मुलाकात एक ब्राह्मण डॉक्टर शारदा कबीर से हुई। डॉ० के रूप में उन्हें एक नया जीवन साथी मिल गया, उन्होंने दूसरी शादी १५ अप्रैल १९४८ को दिल्ली में की।

दलित मूवमेंट : भारत लौटने के बाद अम्बेडकर जी ने छुआछूत व जातिवाद, जो किसी बीमारी से कम नहीं थी, ये देश को कई हिस्सों में तोड़ रही थी और जिसे देश से निकालना बहुत जरुरी हो गया था, इसके खिलाफ अम्बेडकर जी ने मोर्चा छेड़ दिया। अम्बेडकर जी ने कहा नीची जाति व जनजाति एवं दलित के लिए देश में अलग से एक चुनाव प्रणाली होनी चाहिए, उन्हें भी पूरा हक मिलना चाहिए कि वे देश के चुनाव में हिस्सा ले सके। अम्बेडकर जी ने इनके आरक्षण की भी बात सामने रखी। अम्बेडकर जी देश के कई हिस्सों में गए, वहां लोगों को समझाया कि जो पुरानी प्रथा प्रचलित है वो सामाजिक बुराई है उसे जड़ से उखाड़ कर फेंक देना चाहिए। उन्होंने एक न्यूज पेपर 'मूक्नायका' (लीडर ऑफ साइलेंट) शुरू किया। एक बार एक रैली में उनके भाषण को सुनने के बाद कोल्हापुर के शासक शाहूकर ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इस बात का पुरे देश में बहुत हल्ला रहा, इस बात ने देश की राजनीती को एक नयी दिशा दे दी थी।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर राजनैतिक सफर : १९३६ में अम्बेडकर जी ने स्वतंत्र मजदूर पार्टी का गठन किया। १९३७ के केन्द्रीय विधानसभा चुनाव में उनकी पार्टी को १५ सीट की जीत मिली। अम्बेडकर जी अपनी इस पार्टी को आल इंडिया शीडयूल कास्ट पार्टी में बदल दिया, इस पार्टी के साथ वे १९४६ में संविधान सभा के चुनाव में खड़े हुए, लेकिन उनकी इस पार्टी का चुनाव में बहुत ही खराब प्रदर्शन रहा। कांग्रेस व महात्मा गाँधी ने अछूते लोगों को हरिजन नाम दिया, जिससे सब लोग उन्हें हरिजन ही बोलने लगे, लेकिन अम्बेडकर जी को ये बिल्कुल पसंद नहीं आया और उन्होंने उस बात का विरोध किया। उनका कहना था अछूते लोग भी हमारे समाज का एक हिस्सा है, वे भी बाकि लोगों की तरह नार्मल इन्सान है। अम्बेडकर जी को रक्षा सलाहकार कमिटी में रखा गया व वाइसराय एग्जीक्यूटिव कौसिल में उन्हें लेबर का मंत्री बनाया गया। वे आजाद भारत के पहले लॉ मंत्री बने, दलित होने के बावजूद शेष पृष्ठ 11 पर

अखिल भारत हिन्दू महासभा की 104 वीं वर्षगांठ (13-4-2019 ई०)

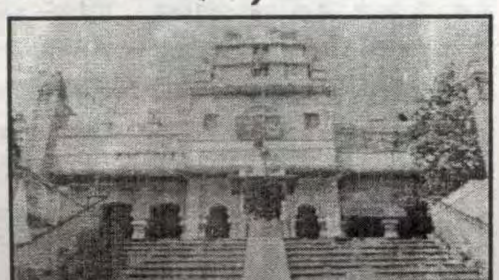

1. 1915 - 37 तक यह सामाजिक–धार्मिक संगठन रही।
2. 1938 से अब तक यह राजनीतिक दल है।
3. यह देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी है।
4. यह वीर सावरकर और भाई परमानन्द के आदर्शो के अनुसार चलती है।
5. 1945-46 के केन्द्रीय असेम्बली के चुनावों में इसे 16 प्रतिशत मत मिले थे।
6. इन चुनावों में आर्य समाजियों ने खुलकर और संघ के स्वयंसेवकों ने अप्रत्यक्ष रूप से गांधी–नेहरू की कांग्रेस का साथ दिया था।
7. वीर सावरकर ने 1947 में ही कहा था कि स्वतंत्र भारत में अन्य दलों की नीतियों को हिन्दूवादी बनाए रखने के लिए हिन्दू महासभा की आवश्यकता है।
8. जनता अन्य दलों से तंग हो चुकी है क्योंकि सभी दल हिन्दुओं को जाति के आधार पर बांटते हैं और चुनावी लाभ उठाते हैं।
9. हिन्दू महासभा की मांग-
(क) हिन्दू रत्न पुरस्कार आरम्भ करे। प्रतिवर्ष 5 व्यक्तियों (जीवितों या मरणोपरांत को) यह दिया जाए।
(ख) हिन्दू आयोग बनाए जो दुखी–पीड़ित–निराश हिन्दुओं की शिकायतों को सुने और उन्हें सांत्वना दे।
(ग) हिन्दू संख्या आयोग बनाए जो हिन्दुओं की गिर रही संख्या को रोकने के लिए ठोस उपाय सुझाए।
(घ) हिन्दू आरक्षण आयोग बनाए जो प्रचार करे कि आरक्षण केवल बहुसंख्यकों के लिए है क्योंकि उसकी जातियों में ऊंच नीच, छुआछूत, अस्पृश्यता, भेदभाव लम्बे समय से रहा है अतः समानता लाने के लिए उन्हें सहारा देने की आवश्यकता है।
(ङ) 2052 ई० से हिन्दुओं के लिए आरक्षण का आधार आर्थिक रखने की घोषणा की जाए।
(च) धारा 29 व 30 को सभी पर लागू करने की व्यवस्था करने का आश्वासन दिया जाए ताकि हिन्दू स्कूलों में धर्म शिक्षा दी जा सके।
(छ) 1951 में नेहरू सरकार द्वारा बनाए गए "द हिन्दू रिलीजियस एण्ड चैरिटेबल एंडोमैन्ट ऐक्ट" को समाप्त करने की घोषणा की जाए क्योंकि पिछले 61 वर्षों में अधिगृहीत किए गए मंदिरों की आय का बड़ा भाग अहिन्दुओं पर व्यय किया गया।
(ज) मिलावट करने वालों– नकली माल बनाने वालों– अपहरण करने वालों– देश द्रोही कार्य करने वालों– अलगाववादियों को मृत्यु दण्ड देने की व्यवस्था की जाए।
(झ) अल्पसंख्यकों का निर्धारण राज्य स्तर पर करने की घोषणा की जाए। अल्पसंख्यक का दर्जा उस समुदाय को दिया जाए जिसकी संख्या 10 प्रतिशत से अधिक न हो।
(ण) गुड फ्राइडे (ईसा मसीह का मृत्यु दिवस) का केन्द्रीय सरकारी अवकाश बन्द कराकर हिन्दू नव वर्ष (वर्ष प्रतिपदा विक्रमी सम्वत्) को केन्द्रीय सरकारी अवकाश घोषित किया जाये।

शहीदों की गाथा

तात्या टोपे

साभार सत्यचक्र

तात्या टोपे भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के एक प्रमुख सेनानायक थे। सन १८५७ के महान स्वाधीनता संग्राम में उनकी भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण, प्रेरणादायक और बेजोड़ थी।

सन् अट्ठारह सौ सत्तावन के विद्रोह की शुरूआत १० मई को मेरठ से हुई थी। जल्दी ही क्रांति की चिंगारी समूचे उत्तर भारत में फैल गई। विदेशी सत्ता का खूनी पंजा मोड़ने के लिए भारतीय जनता ने जबरदस्त संघर्ष किया। उसने अपने खून से त्याग और बलिदान की अमर गाथा लिखी। उस रक्तरंजित और गौरवशाली इतिहास के मंच से झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब पेशवा, राव साहब, बहादुरशाह जफर आदि के विदा हो जाने के बाद करीब एक साल बाद तक तात्या विद्रोहियों की कमान संभाल रहे।

तात्या का जन्म महाराष्ट्र में नासिक के निकट पटौदा जिले के येवला नामक गाँव में एक देशस्थ ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता पाण्डुरंग राव भट्ट (मावलेकर), पेशवा बाजीराव द्वितीय के घरू कर्मचारियों में से थे। बाजीराव के प्रति स्वामिभक्त होने के कारण वे बाजीराव के साथ सन् १८१८ में बिठूर चले गये थे। तात्या का वास्तविक नाम रामचंद्र पाण्डुरंग राव था, परंतु लोग स्नेह से उन्हें तात्या के नाम से पुकारते थे। तात्या का जन्म सन १८१४ माना जाता है। अपने आठ भाई-बहनों में तात्या सबसे बड़े थे।

कुछ समय तक तात्या ने ईस्ट इंडिया कम्पनी में बंगाल आर्मी की तोपखाना रेजीमेंट में भी काम किया था, परंतु स्वतंत्र चेता और स्वाभिमानी तात्या के लिए अंग्रेजों की नौकरी असह्य थी। इसलिए बहुत जल्दी उन्होंने उस नौकरी से छुटकारा पा लिया और बाजीराव की नौकरी में वापस आ गये। कहते हैं तोपखाने में नौकरी के कारण ही उनके नाम के साथ टोपे जुड़ गया, परंतु कुछ लोग इस संबंध में एक अलग किस्सा बतलाते हैं। कहा जाता है कि बाजीराव ने तात्या को एक बेशकीमती और नायाब टोपी दी थी। तात्या इस टोपे को बड़े चाव से पहनते थे। अतः बड़े ठाट-बाट से वह टोपी पहनने के कारण लोग उन्हें तात्या टोपी या तात्या टोपे के नाम से पुकारने लगे। वह आजन्म अविवाहित रहे।

१८५७ के विद्रोह में भूमिका

सन् १८५७ के विद्रोह की लपटें जब कानपुर पहुँचीं और वहाँ के सैनिकों ने नाना साहब को पेशवा और अपना नेता घोषित किया तो तात्या टोपे ने कानपुर में स्वाधीनता स्थापित करने में अगुवाई की। तात्या टोपे को नाना साहब ने अपना सैनिक सलाहकार नियुक्त किया। जब बिग्रेडियर जनरल हैवलॉक की कमान में अंग्रेज सेना ने इलाहाबाद की ओर से कानपुर पर हमला किया तब तात्या ने कानपुर की सुरक्षा में अपना जी-जान लगा दिया, परंतु १६ जुलाई, १८५७ को उसकी पराजय हो गई और उसे कानपुर छोड़ देना पड़ा। शीघ्र ही तात्या टोपे ने अपनी सेनाओं का पुनर्गठन किया और कानपुर से बारह मील उत्तर में बिठूर पहुँच गये। यहाँ से कानपुर पर हमले का मौका खोजने लगे। इस बीच हैवलॉक ने अचानक ही बिठूर पर आक्रमण कर दिया। यद्यपि तात्या बिठूर की लड़ाई में पराजित हो गये परंतु उनकी कमान में भारतीय सैनिकों ने इतनी बहादुरी प्रदर्शित की कि अंग्रेज सेनापति को भी प्रशंसा करनी पड़ी।

तात्या एक बेजोड़ सेनापति थे। पराजय से विचलित न होते हुए वे बिठूर से राव साहेब सिंधिया के इलाके में पहुँचे। वहाँ व ग्वालियर कन्टिजेन्ट नाम की प्रसिद्ध सैनिक टुकड़ी को अपनी ओर मिलाने में सफल हो गये। वहाँ से वे एक बड़ी सेना के साथ काल्पी पहुँचे। नवंबर १८५७ में उन्होंने कानपुर पर आक्रमण किया। मेजर जनरल विन्ढल के कमान में कानपुर की सुरक्षा के लिए स्थित अंग्रेज सेना तितर-बितर होकर भागी, परंतु यह जीत थोड़े समय के लिए थी। ब्रिटिश सेना के प्रधान सेनापति सर कॉलिन कैम्पबेल ने तात्या को छह दिसंबर को पराजित कर दिया। इसलिए तात्या टोपे खारी चले गये और वहाँ नगर पर कब्जा कर लिया। खारी में उन्होंने अनेक तोपें और तीन लाख रुपये प्राप्त किए जो सेना के लिए जरूरी थे। इसी बीच २२ मार्च को सर ह्यूरोज ने झाँसी पर घेरा डाला। ऐसे नाजुक समय में तात्या टोपे करीब २०,००० सैनिकों के साथ रानी लक्ष्मी बाई की मदद के लिए पहुँचे। ब्रिटिश सेना तात्या टोपे और रानी की सेना से घिर गई। अंततः रानी की विजय हुई। रानी और तात्या टोपे इसके बाद काल्पी पहुँचे। इस युद्ध में तात्या टोपे को एक बार फिर ह्यूरोज के खिलाफ हार का मुँह देखना पड़ा।

कानपुर, चरखारी, झाँसी और कोंच की लड़ाइयों की कमान तात्या टोपे के हाथ में थी। चरखारी को छोड़कर दुर्भाग्य से अन्य स्थानों पर उनकी पराजय हो गई। तात्या टोपे अत्यंत योग्य सेनापति थे। कोंच की पराजय के बाद उन्हें यह समझते देर न लगी कि यदि कोई नया और जोरदार कदम नहीं उठाया गया तो स्वाधीनता सेनानियों की पराजय हो जाएगी। इसलिए तात्या ने काल्पी की सुरक्षा का भार झाँसी की रानी और अपने अन्य सहयोगियों पर छोड़ दिया और वे स्वयं वेश बदलकर ग्वालियर चले गये। जब ह्यूराज काल्पी की विजय का जश्न मना रहा था, तब तात्या ने एक ऐसी विलक्षण सफलता प्राप्त की जिससे ह्यूरोज अचंभे में पड़ गया। तात्या का जवाबी हमला अविश्वसनीय था। उसने महाराजा जयाजी राव सिंधिया की फौज को अपनी ओर मिला लिया था और ग्वालियर के प्रसिद्ध किले पर कब्जा कर लिया था। झाँसी की रानी, तात्या और राव साहब ने जीत के डंके बजाते हुए ग्वालियर में प्रवेश किया और नाना साहब को पेशवा घोषित किया। इस रोमांचकारी सफलता ने स्वाधीनता सेनानियों के दिलों को खुशी से भर दिया, परंतु इसके पहले कि तात्या टोपे अपनी शक्ति को संगठित करते, ह्यूरोज ने आक्रमण कर दिया। फूलबाग के पास हुए युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई १८ जून, १८५८ को शहीद हो गयीं।

इसके बाद तात्या टोपे का दस माह का जीवन अद्वितीय शौर्य गाथा से भरा जीवन है। लगभग सब स्थानों पर विद्रोह कुचला जा चुका था, लेकिन तात्या ने एक साल की लम्बी अवधि तक मुट्ठी भर सैनिकों के साथ अंग्रेज सेना को झकझोरे रखा। इस दौरान उन्होंने दुश्मन के खिलाफ एक ऐसे जबर्दस्त छापेमार युद्ध का संचालन किया, जिसने उन्हें दुनिया के छापेमार योद्धाओं की पहली पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। इस छापेमार युद्ध के दौरान तात्या टोपे ने दुर्गम पहाड़ियों और घाटियों में बरसात से उफनती नदियों और भयानक जंगलों के पार मध्यप्रदेश और राजस्थान में ऐसी लम्बी दौड़ दौड़ी जिसने अंग्रेजी कैम्प में तहलका मचाये रखा। बार-बार उन्हें चारों ओर से घेरने का प्रयास किया गया और बार-बार तात्या को लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी, परंतु यह छापामार योद्धा एक विलक्षण सूझ-बूझ से अंग्रेजों के घेरों और जालों के परे निकल गया। तत्कालीन अंग्रेज लेखक सिलवेस्टर ने लिखा है कि "हजारों बार तात्या टोपे का पीछा किया गया और चालीस-चालीस मील तक एक दिन में घोड़ों को दौड़ाया गया, परंतु तात्या टोपे को पकड़ने में कभी सफलता नहीं मिली।"

ग्वालियर से निकलने के बाद तात्या ने चम्बल पार की और राजस्थान में टोंक, बूँदी और भीलवाड़ा गये। उनका इरादा पहले जयपुर और उदयपुर पर कब्जा करने का था, लेकिन मेजर जनरल राबर्ट्स वहाँ पहले से ही पहुँच गया। परिणाम यह हुआ कि तात्या को, जब वे जयपुर से ६० मील दूर थे, वापस लौटना पड़ा। फिर उनका इरादा उदयपुर पर अधिकार करने का हुआ, परंतु राबर्ट्स ने घेराबंदी की। उसने लेफ्टीनेंट कर्नल होम्स को तात्या का पीछा करने के लिए भेजा, जिसने तात्या का रास्ता रोकने की पूरी तैयारी कर रखी थी, परंतु ऐसा नहीं हो सका। भीलवाड़ा से आगे कंकरोली में तात्या की अंग्रेज सेना से जबर्दस्त मुठभेड़ हुई जिसमें वे परास्त हो गये।

कंकरोली की पराजय के बाद तात्या पूर्व की ओर भागे, ताकि चम्बल पार कर सकें। अगस्त का महीना था। चम्बल तेजी से बढ़ रही थी, लेकिन तात्या को जोखिम उठाने में आनंद आता था। अंग्रेज उनकी पीछा कर रहे थे, इसलिए उन्होंने बाढ़ में ही चम्बल पार कर ली और झालावाड की राजधानी झालारा पाटन पहुँचे। झालावाड की शासक अंग्रेज-परस्त था, इसलिए तात्या ने अंग्रेज सेना के देखते-देखते उससे लाखों रुपये वसूल किये और ३० तोपों पर कब्जा कर लिया। यहाँ से उनका इरादा इंदौर पहुँचकर वहाँ के स्वाधीनता सेनानियों को अपने पक्ष में करके फिर दक्षिण पहुँचना था। तात्या को भरोसा था कि यदि नर्मदा पार करके महाराष्ट्र पहुँचना सम्भव हो जाये तो स्वाधीनता संग्राम को न केवल जारी रखा जा सकेगा, बल्कि अंग्रेजों को भारत से खदेड़ा भी जा सकेगा।

सितंबर, १८५८ के शुरू में तात्या ने राजगढ़ की ओर रुख किया। वहाँ से उनकी योजना इंदौर पहुँचने की थी, परंतु इसके पहले कि

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 1 का

सुप्रीम कोर्ट ने कहा हुर्रियत.......

से अहम है कि जबकि हाल ही में जम्मू–कश्मीर में सरकार ने इन अलगाववादी संगठनों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की है। वटाली को विगत १३ सितंबर, २०१८ को दिल्ली हाईकोर्ट के जमानत देने के बाद सर्वोच्च अदालत का यह फैसला एनआइए की अपील पर आया है। सुप्रीम कोर्ट ने वटाली को मिली राहत को खारिज करते हुए कहा कि हाई कोर्ट ने इस मामले में सही रवैया नहीं अख्तियार किया। जबकि एनआइए ने उसके खिलाफ काफी सुबूत पेश किए थे। उन्होंने सुबूतों को परखने में गलती की। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि जमानत मंजूर करने के लिए ऐसा लगता है कि हाई कोर्ट ने सुबूतों की मेरिट को परखना शुरू कर दिया था। लश्कर सरगना हाफिज सईद पर आरोप है कि उसने वटाली से रकम लेकर अलगाववादियों और कुछ ऐसे लोगों को धन दिया जो घाटी में पत्थरबाजी में शामिल हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार से हुर्रियत सहित सभी आंतकी संगठनों को प्रतिबंधित करने की मांग की है।

शेष पृष्ठ 5 का

रामनवमी पर विशेष.......

छिड़क कर शुद्ध कर लेना चाहिए। इसके पश्चात स्नान करके व्रत का संकल्प लेना चाहिए। इसके बाद एक लकड़ी के चौकोर टुकड़े पर सतिया बनाकर एक जल से भरा गिलास रखना चाहिए और अपनी अंगुली से चाँदी का छल्ला निकाल कर रखना चाहिए। इसे प्रतीक रुप से गणेशजी माना जाता है। व्रत कथा सुनते समय हाथ में गेहूँ–बाजरा आदि के दाने लेकर कहानी सुनने का भी महत्व कहा गया है। रामनवमी के व्रत के दिन मंदिर में अथवा मकान पर ध्वजा, पताका, तोरण और बंदनवार आदि से सजाने का विशेष विधि–विधान है। व्रत के दिन कलश स्थापना और राम जी के परिवार की पूजा करनी चाहिए, और भगवान श्री राम का दिनभर भजन, स्मरण, स्तोत्र्पाठ, दान, पुण्य, हवन, पितृश्राद्व और उत्सव किया जाना चाहिए। रामनवमी व्रत कथा राम, सीता और लक्ष्मण वन में जा रहे थे। सीता जी और लक्ष्मण को थका हुआ देखकर राम जी ने थोड़ा रुककर आराम करने का विचार किया और एक बुढ़िया के घर गए। बुढ़िया सूत कात रही थी। बुढ़िया ने उनकी आवभगत की और बैठाया, स्नान–ध्यान करवाकर भोजन करवाया। राम जी ने कहा– बुढ़िया माई, **पहले मेरा हंस मोती चुगाओ, तो में भी करूं।** बुढ़िया बेचारी के पास मोती कहाँ से आवें, सूत कात कर गरीब गुजारा करती थी। अतिथि को ना कहना भी वह ठीक नहीं समझती थी। दुविधा में पड़ गई। अतः दिल को मजबूत कर राजा के पास पहुँच गई। और अंजली मोती देने के लिये विनती करने लगी। राजा अचम्भे में पड़ा कि इसके पास खाने को दाने नहीं हैं और मोती उधार मांग रही है। इस स्थिति में बुढ़िया से मोती वापस प्राप्त होने का तो सवाल ही नहीं उठता। आखिर राजा ने अपने नौकरों से कहकर बुढ़िया को मोती दिला दिये। राम, लक्ष्मण और सीता बुढ़िया मोती लेकर घर आई, हंस को मोती चुगाए और मेहमानों की आवभगत की। रात को आराम कर सवेरे राम जी, सीता जी और लक्ष्मण जी जाने लगे। राम जी ने जाते हुए उसके पानी रखने की जगह पर मोतियों का एक पेड़ लगा दिया। दिन बीतते गये और पेड़ बड़ा हुआ, पेड़ बढ़ने लगा, पर बुढ़िया को कुछ पता नहीं चला। मोती के पेड़ से पास–पड़ोस के लोग चुग–चुगकर मोती ले जाने लगे। एक दिन जब बुढ़िया उसके नीचे बैठी सूत कात रही थी। तो उसकी गोद में एक मोती आकर गिरा। बुढ़िया को तब ज्ञात हुआ। उसने जल्दी से मोती बांधे और अपने कपड़े में बांधकर वह किले की ओर ले चली। उसने मोती की पोटली राजा के सामने रख दी। इतने सारे मोती देख राजा अचम्भे में पड़ गया। उसके पूछने पर बुढ़िया ने राजा को सारी बात बता दी। राजा के मन में लालच आ गया। वह बुढ़िया से मोती का पेड़ मांगने लगा। बुढ़िया ने कहा कि आस–पास के सभी लोग ले जाते हैं। आप भी चाहे तो ले लें। मुझे क्या करना है। राजा ने तुरन्त पेड़ मंगवाया और अपने दरबार में लगवा दिया। पर रामजी की मर्जी, मोतियों की जगह कांटे हो गये और आते–आते लोगों के कपड़े उन कांटों से खराब होने लगे। एक दिन रानी की ऐड़ी में एक कांटा चुभ गया और पीड़ा करने लगा। राजा ने पेड़ उठवाकर बुढ़िया के घर वापस भिजवा दिया। पेड़ पर पहले की तरह से मोती लगने लगे। बुढ़िया आराम से रहती और खूब मोती बांटती।

व्रत का फल : श्री रामनवमी का व्रत करने से व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि होती है। उसकी धैर्य शक्ति का विस्तार होता है। इसके अतिरिक्त उपवासक को विचार शक्ति, बुद्धि, श्रद्धा, भक्ति और पवित्रता की भी वृद्धि होती है। इस व्रत के विषय में कहा जाता है, कि जब इस व्रत को निष्काम भाव से किया जाता है। और आजीवन किया जाता है, तो इस व्रत के फल सर्वाधिक प्राप्त होते हैं। रामनवमी और जन्माष्टमी तो उल्लासपूर्वक मनाते हैं पर उनके कर्म व संदेश को नहीं अपनाते। कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया गीता ज्ञान आज सिर्फ एक ग्रंथ बनकर रह गया है। तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में भगवान राम के जीवन का वर्णन करते हुए बताया है कि श्रीराम प्रातः अपने माता–पिता के चरण स्पर्श करते थे जबकि आज चरण स्पर्श तो दूर बच्चे माता–पिता की बात तक नहीं मानते।

उद्देश्य : भगवान श्रीराम जी ने अपने जीवन का उद्देश्य अधर्म का नाश कर धर्म की स्थापना करना बताया पर उससे उनका आशय यह था कि आम इंसान शांति के साथ जीवन व्यतीत कर सके और भगवान की भक्ति कर सके। उन्होंने न तो किसी प्रकार के धर्म का नामकरण किया और न ही किसी विशेष प्रकार की भक्ति का प्रचार किया।

भक्ति और ज्ञान : भक्ति का चरम शिखर किसी ने प्राप्त किया है तो उनमें सबसे बड़ा नाम संत कबीर और तुलसीदासजी का है। मीरा और सूर भी इसी क्रम में आते हैं। वाल्मीकि और वेदव्यास को ज्ञानियों में चरम शिखर के प्रतीक मान सकते हैं। ईश्वर को प्राप्त करने के दोनों मार्ग– भक्ति और ज्ञान हैं। भगवान को भक्ति और ज्ञान दोनों ही प्रिय हैं। वाल्मीकि और वेदव्यास ने ज्ञान मार्ग को चुना तो वह समाज को ऐसी रचनाएँ दे गये कि सदियों तक उनकी चमक फीकी नहीं पड़ सकती और कबीर, तुलसी, सूर, और मीरा ने भक्ति का सर्वोच्च शिखर छूकर यह दिखा दिया है कि इस कलियुग में भी भगवान भक्ति में कितनी शक्ति है। संत कबीर जी ने अपनी रचनाओं में भक्ति और ज्ञान दोनों का समावेश इस तरह किया कि वर्तमान समय में कोई ऐसा कर सकता है यह सोचना भी कठिन है

शेष पृष्ठ 1 का

सेना ने किया पाकिस्तान.......

लोगों की जान चली गई, इस गोलाबारी में २४ अन्य लोग घायल भी हुए थे। जम्मू कश्मीर सीमा पर पाकिस्तान की गोलीबारी की थी, भारतीय सेना ने भी इसका मुंहतोड़ जवाब दिया था। उन्होंने बताया कि राजौरी जिले के नौशेरा सेक्टर और पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा के पास भारी गोलाबारी एवं गोलीबारी जारी थी। अधिकारियों ने बताया कि पुंछ और नौशेरा में शाहपुर उप–क्षेत्र में भी पाकिस्तानी सैनिकों ने गोलाबारी और गोलीबारी की। भारत ने जवाबी कार्रवाई में 'पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में रखचिकरी और रावलाकोट में नियंत्रण रेखा के पास सात चौकियों को तबाह कर दिया। इस बीच, पाकिस्तान के 'इंटर–सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने बताया कि नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास भारतीय सेना की कार्रवाई में उसके तीन सैनिक मारे गए। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान भारी हथियारों और १२० एमएम के मोर्टार गोलों का इस्तेमाल पुंछ में असैन्य नागरिकों को निशाना बनाने के लिए कर रहा है, जिससे ग्रामीणों में तनाव फैला हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि पाकिस्तान की ओर से जारी गोलाबारी के मद्देनजर लोगों को घरों में रहने की सलाह दी गई है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार से मांग की है कि गुलाम कश्मीर को भारम में तुरन्त सम्मिलित किया जाये। उन्होंने कहा है कि गुलाम कश्मीर में आंतकी प्रशिक्षण शिविरों को तुरन्त ध्वस्त किया जायें।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 7 का **संवेदनाएँ दरक रही..........**

कर कोर्ट द्वारा कठोर दंड अगले तीन माह में मिलना चाहिए। जब तक गद्दारों में खौफ निर्माण नहीं होगा। घटनाएँ रुकेगी नहीं। घटना के बाद देर से होने वाले दंड का प्रभाव खो जाता है।

देश के समाचार पत्र : पत्रिकाओं को अपने मुखपृष्ठ पर हत्या, आत्महत्या, भीड़तंत्र द्वारा हत्या, अत्याचार, बलात्कार की घटनाओं को स्थान नहीं देना चाहिए। भीतर के पन्नों पर छोटे से समाचार हों। उसी प्रकार समाचार की टीवी चैनलों, युट्यूब, फेसबुक आदि इन घटनाओं को प्रमुखता से स्थान नहीं देना चाहिए। घटना कैसे घटी, कैसे हत्या आदि घृणित कार्यों को अंजाम दिया इसका विवरण तो कदापि नहीं देना चाहिए। टीआरपी के चक्कर में वही घटना बार–बार बताने से भी मानवीय संवेदनाएँ दरक रही हैं। अधिकतर घटनाएँ सिनेमा, टीवी आदि संचार मीडिया के खबरों की घटना के विवरण से कुशिक्षा प्राप्त कर की गई हैं। भीड़तंत्र की घटना में सोशल मीडिया द्वारा अफवाह फैलाने से हो रही है, ऐसा निष्कर्ष निकला है। समाज को भी ऐसे माध्यमों तथा घटना में शामिल परिवारों का अलिखित, अघोषित बहिष्कार स्वेच्छा से करना चाहिए। अर्थात् शासन की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण प्रभावी–फलदायी होगी।

शेष पृष्ठ 8 का **डॉ० भीमराव अम्बेडकर.........**

उनका मंत्री बनना उनके के लिए बहुत बड़ी उपाधि थी।

संविधान का गठन : भीमराव अम्बेडकर जी को संविधान गठन कमिटी का चेयरमैन बनाया गया। उनको स्कॉलर व प्रख्यात विदिबेत्ता भी कहा गया। अम्बेडकर जी ने देश की भिन्न भिन्न जातियों को एक दुसरे से जोड़ने के लिए एक पुलिया का काम किया, वे सबके सामान अधिकार की बात पर जोर देते थे। अम्बेडकर जी के अनुसार अगर देश की अलग अलग जाति एक दुसरे से अपनी लड़ाई खत्म नहीं करेंगी, तो देश एकजुट कभी नहीं हो सकता।

बौध धर्म में रूपांतरण : १९५० में अम्बेडकर जी एक बौद्धिक सम्मेलन को अटेंड करने श्रीलंका गए, वहां जाकर उनका जीवन बदल गया। वे बौध धर्म से अत्यधिक प्रभावित हुए, और उन्होंने धर्म रुपान्तरण की ठान ली। श्रीलंका से भारत लौटने के बाद उन्होंने बौध व उनके धर्म के बारे में बुक लिखी व अपने आपको इस धर्म में बदल लिया। अपने भाषण में अम्बेडकर जी हिन्दू रीती रिवाजो व जाति विभाजन की घोर निंदा करते थे। १९५५ में उन्होंने भारतीय बौध महासभा का गठन किया। उनकी बुक 'द बुध व उनका धर्म' का विभोजन उनके मरणोपरांत हुआ। १४ अक्टूबर १९५६ को अम्बेडकर जी ने एक आम सभा का आयोजन किया, जहाँ उन्होंने अपने ५ लाख सपोर्टर का बौध धर्म में रुपान्तरण करवाया। अम्बेडकर जी काठमांडू में आयोजित चोथी वर्ल्ड बुद्धिस्ट कांफ्रेंस को अटेंड करने वहां गए। २ दिसम्बर १९५६ में उन्होंने अपनी पुस्तक 'द बुध और कार्ल्स मार्क्स' का हस्तलिपिक पूरा किया।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर की मृत्य : १९५४–५५ के समय अम्बेडकर जी अपनी सेहत से बहुत परेशान थे, उन्हें डायबटीज, आँखों में धुधलापन व कई तरह की अन्य बहुत सी बीमारियों ने घेर लिया था। ६ दिसम्बर १९५६ को अपने घर दिल्ली में उन्होंने अंतिम सांस ली। उन्होंने अपने जीवन में बौध धर्म को मान लिया था, इसलिए उनका अंतिम संस्कार बौध धर्म की रीती अनुसार ही हुआ।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय् व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 2 का **मातृ देवो भवः.........**

ऐकिक (युनिक) भेंट है, देन है। माँ शास्त्र सम्मत है, माँ ज्ञान विज्ञान सम्मत है। माँ आध्यात्म है, विचार है, वह निराकार भी है और साकार भी। माँ पूजनीय है, वंदनीय है, अभिनंदनीय है। माँ, संप्रदाय, समुदाय व सांसारिकता से परे है।

अंत में माँ के विषय में माँ की महिमा के बारे में बखान करना अर्थात अथाह समुद्र की जल राशि में से कुछ बूँदें निकालना। मनुष्य या प्राणी पितृत्रृण से भले ही उत्रृण हो जाये मातृत्रृण से उत्रृण होना संभव नहीं। जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। माँ के विषय में कवियों, शायरों, साहित्यकारों ने भी बहुत लिखा है। फिल्मों, नाटकों में भी माँ के किरदारों ने माँ के महत्व को प्रतिपादित किया है। यहाँ यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि माँ के मंदिर सदैव शिखरों पर ही होते हैं। माँ–माँ गंगे माँ भारती, मातृभूमि और मातृ देवो भवः हमारी हम सबकी अस्मिता है, पहचान है।

शेष पृष्ठ 4 का **जानिए अंगूर खाने ....**

दुर्बलता में २५० ग्राम अंगूर प्रतिदिन खाने से लाभ होता है।

- उल्टी होने पर अंगूर का रस पीने से धातु की वृद्धि होती है।
- नपुंसकता में अंगूर खाने से धातु की वृद्धि होती है।
- खांसी और दमा में मुनक्का को तवा पर भूनकर काला नमक मिलाकर खाने से लाभ होता है।
- भोजन के साथ अंगूर की चटनी बनाकर खाने से भोजन पाचन सुगम तरीके से होता है।
- अंगूर के साथ जीरा, काली मिर्च, पुदीना और नमक मिलाकर चटनी बनायें।
- अंगूर का रस प्यास को शांत करता है। ज्वर पीड़ित का यदि मुँह सूखने लगे तो अंगूर के रस का सेवन करने से लाभ होता है।

शेष पृष्ठ 9 का **शहीदों की गाथा..........**

तात्या इंदौर के लिए रवाना होते अंग्रेजी फौज ने मेजर जनरल माइकिल की कमान में राजगढ़ के निकट तात्या की सेना को घेर लिया। माइकिल की फौजें थकी हुई थीं इसलिए उसने सुबह हमला करने का विचार किया, परंतु दूसरे दिन सुबह उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि तात्या की सेना उसके जाल से निकल भागी है। तात्या ने ब्यावरा पहुँचकर मोर्चाबंदी कर रखी थी। यहाँ अंग्रेजों ने पैदल, घुड़सवार और तोपखाना दस्तों को लेकर एक साथ आक्रमण किया। यह युद्ध भी तात्या हार गये। उनकी २७ तोपें अंग्रेजों के हाथ लगीं। तात्या पूर्व में बेतवा की घाटी की ओर चले गये। सिरोंज में तात्या ने चार तोपों पर कब्जा कर लिया और एक सप्ताह विश्राम किया। सिरोंज से वे उत्तर में ईशागढ़ पहुँचे और कस्बे को लूटकर पाँच और तोपों पर कब्जा किया। ईशागढ़ से तात्या की सेना दो भागों में बंट गई। एक टुकड़ी राव साहब की कमान में ललितपुर चली गई और दूसरी तात्या की कमान में चंदेरी। तात्या का विश्वास था कि चंदेरी में सिंधिया की सेना उसके साथ हो जाएगी, परंतु ऐसा नहीं हुआ। इसलिए वे २० मील दक्षिण में, मगावली चले गये। वहाँ माइकिल ने उनका पीछा किया और १० अक्टूबर को उनको पराजित किया। अब तात्या ने बेतवा पार की और ललितपुर चले गये जहाँ राव साहब भी मौजूद थे। उन दोनों का इरादा बेतवा के पार जाने का था परंतु नदी के दूसरे तट पर अंग्रेज सेना रास्ता रोके खड़ी थी। चारों ओर घिरा देखकर तात्या ने नर्मदा पार करने का विचार किया। इस मंसूबे को पूरा करने के लिए वे सागर जिले में खुरई पहुँचे, जहाँ माइकिल ने उसकी सेना के पिछले दस्ते को परास्त कर दिया। इसलिए तात्या ने होशंगाबाद और नरसिंहपुर के बीच, फतेहपुर के निकट सरैया घाट पर नर्मदा पार की। तात्या ने अक्टूबर, १८५८ के अंत में करीब २५०० सैनिकों के साथ नर्मदा पार की थी। **(शेष अगले अंक में)**

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य..................................1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

वि: ापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778 डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

हिजाब के ख़िलाफ साहसिक लड़ाई

पिछले वर्ष विदा मोवाहेदी नामक ३१ वर्षीय एक युवती ने तेहरान में सड़क किनारे यूटिलिटी बॉक्स पर चढ़कर एक छड़ी पर हिजाब को बाँधकर झण्डे की तरह लहराया था। इस विरोध के लिए उसे जेल में बंद कर दिया गया। कुछ दिन बाद वह जेल से रिहा हुई। मोवाहेदी के इस शान्तिपूर्ण हिजाब विरोध ा के बाद ईरान में और भी कई लड़कियाँ और महिलाएँ यूटिलिटी बॉक्स या फिर अन्य किसी ऊँचे स्थान पर चढ़कर डण्डे या पेड़ की डाल में हिजाब को झण्डे की तरह बाँधकर लहरा रही हैं। करीब ४० वर्षों से इस देश में महिलाओं के लिए ह़िजाब आवश्यक है। सिर के बाल से लेकर पैर के नाखून तक इस तरह ढककर रखना होगा कि दूसरा व्यक्ति न देख सके। इस्लामिक नेताओं ने जब इस प्रथा की शुरूआत की थी तो इसका पूरे ईरान में व्यापक विरोध हुआ था, परंतु विरोध विफल हो गया। आज सभी ईरानी लड़कियाँ भीड़ के बीच सड़क पर चलते हुए अचानक सिर से हिजाब नहीं हटा रही हैं, लेकिन अंदर–अंदर विरोध काफी वर्षों से चल रहा है। २०१४ में मासिह एलिनेजाड नामक प्रवासी ईरानी पत्रकार ने फेसबुक पेज तैयार किया था, जिसका नाम रखा था 'मेरी गुप्त स्वाधीनता'। उक्त पेज के जरिए उन्होंने अपील की थी कि लड़कियाँ ईरान के रास्ते–घाट, दुकान–बाजार, भीड़भाड़ वाले स्थानों पर खड़े होकर अपना हिजाब खोलें और फोटो खींचकर उसे उक्त पेज पर पोस्ट करें। पिछले वर्ष मासिह एलिनेजाड ने एक और आंदोलन शुरू किया, जिसका नाम रखा 'सफेद बुधवार'। इस बार उन्होंने महिलाओं को अनिवार्य रूप से सफेद रंग के हिजाब पहनने के कानून के खिलाफ एक आन्दोलन खड़ा करने के लिए आमन्त्रित किया। २००६ में ईरान छोड़ने से पहले मासिह एलिनेजाड पत्रकारिता करती थीं। उन्होंने बिना हिजाब के गाड़ी चलाते हुए एक फोटो भी फेसबुक पर पोस्ट की थी। अनिवार्य हिजाब के खिलाफ आन्दोलन की मुख्य बातें हैं–यह हमारा शरीर है, इस शरीर के ढकने के लिए हम कैसी पोशाक पहनेंगे या नहीं पहनेंगे, यह फैसला हम स्वयं लेंगे, कोई और नहीं। वे सिर्फ उसे अनिवार्य करने का विरोध कर रही हैं। जिनकी इच्छा होगी वे हिजाब पहनेंगी और जिनकी नहीं होगी वे नहीं पहनेंगी।

दशकों पहले ईरान के सम्राट शाह पहलवी ने हिजाब को प्रतिबन्धित कर दिया था। इससे जो महिलाएँ हिजाब के बिना बाहर नहीं जाना चाहती थीं उन्हें भी इसे मानना पड़ रहा था। वे मानती थीं कि हिजाब पहनने का उनका जो अधिकार है उसका हनन हो रहा है। कई महिलाएँ इसी वजह से घरों से बाहर नहीं निकलती थीं। इसके बाद सियासी बदलाव हुआ और हिजाब अनिवार्य कर दिया गया। ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता अयातुल्ला ख़ोमैनी ने १६७६ में हिजाब को अनिवार्य किया था। सवाल उठता है कि क्या महिलाओं का शरीर पुरुषों की संपत्ति है? अधिकांश पुरुष हमेशा से ही महिलाओं को निजी संपत्ति समझते आए हैं। १६७६ में हिजाब को अनिवार्य करने के खिलाफ महिलाएँ सड़क पर उतरी थीं, पर जीत नहीं पाई थीं। हिजाब के समर्थन में लोग तब नारे लगाते थे, 'या तो हिजाब पहनो, नहीं तो मरने को तैयार रहो।' २००६ में ईरानी नारीवादियों ने अपने समर्थन में १० लाख हस्ताक्षर जुटाए थे और नारी विरोधी कानूनों को निरस्त करने का अनुरोध किया था, लेकिन सरकार ने कोई कानून निरस्त नहीं किया। उस आंदोलन के विफल होने से यही साबित हुआ कि महिलाओं की आजादी के लिए इस तरह के आंदोलन का ईरान में सफल होना संभव नहीं है। वे कहती हैं, 'हम कपड़े के एक टुकड़े के खिलाफ नहीं लड़ रहे हैं। हम अपने सम्मान के लिए लड़ रहे हैं। हमें सिर पर क्या पहनना है, अगर यह फैसला करने नहीं दिया जाएगा तो हमारे माथे के अन्दर जो बुद्धि है, उनका मालिकाना भी हमें नहीं दिया जाएगा।' पूरे ईरान में हिजाब विरोधी आन्दोलन चल रहा है, यह देखकर देश के राष्ट्रपति ने कहा है, 'ठीक ही तो है, तुम अपनी पसंद–नापसंद भावी पीढ़ी पर जबरन नहीं थोप सकते।' एलिनेजाड ने कहा है, 'पहले महिलाएँ डरती थीं, अब सरकार महिलाओं से डर रही है।' साहस ही साहस को जन्म देता है। इस आंदोलन को सिर्फ ईरान में नहीं, पूरी दुनिया में प्रशंसा मिली है। हालांकि यह नहीं हो सकता कि इस्लामिक कानून भी रहे और महिलाओं की आजादी भी। कारण–दोनों परस्पर विरोधी हैं। महिलाओं को दासी अथवा यौन की चीज के बजाए एक संपूर्ण एवं सक्षम मनुष्य के तौर पर चिन्हित करना होगा।

तसलीमा नसरीन

कबिरा खड़ा बजार में

कैसे बढ़ जाती हैं बेरोजगार जनप्रतिनिधियों की संपत्तियां

अधिकांश जनप्रतिनिधि संसद का प्रतिनिधित्व करते हुए किसी व्यापार, उद्योग एवं लाभ कमाने वाली ईकाई से सीधे नहीं जुड़े होते हैं, फिर उनकी धन–सम्पत्ति इतनी तेजी से कैसे बढ़ जाती है? यह विरोधाभास नहीं, बल्कि हमारे लोकतंत्र का दुर्भाग्य है। इसे दुर्भाग्य ही कहेंगे कि यहां का वोट देने वाला आम मतदाता दिन–प्रतिदिन गरीब होता जा रहा है, जबकि ग़रीब वोटरों के वोटों से जीतने वाला जनप्रतिनिधि तेजी से अमीर बनता जा रहा है। लोकतंत्र में संसद और विधानसभा देश की जनता का आईना होती हैं। अब राजनीति सेवा नहीं पैसा कमाने का जरिया बन गई है। आज लाभ के इस धन्धे में नेता करोड़पति बन रहे हैं। राजनीति में यह समृद्धि यूं ही नहीं आई है, इसके पीछे किसी–न–किसी का शोषण और कहीं–न–कहीं बेईमानी जरूर होती है। यदि गंभीरता से आकलन किया जाये तो बस यही घोटालों एवं भ्रष्टाचार की जड़ है। जैसे–जैसे चुनाव नजदीक आते जा रहे हैं, राजनीतिक दल एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप लगा रहे हैं। राहुल गांधी की संपत्ति को लेकर यह बात हैरान तो करती ही है कि २००४ में ५५ लाख की जमीन–जायदाद के मालिक २०१४ में नौ करोड़ की संपदा के स्वामी कैसे हो गए? यह सवाल इसलिए और चकित करता है, क्योंकि सब जानते हैं कि कांग्रेस अध्यक्ष न तो कोई कारोबारी हैं और न ही डॉक्टर या वकील। पता नहीं भाजपा की ओर से जो सवाल उछाला गया उसका कोई संतोषजनक जवाब मिलेगा या नहीं, लेकिन ऐसे जवाब केवल राहुल गांधी से ही अपेक्षित नहीं हैं। आज भाजपा एवं राजनीतिक दलों में ऐसे अनेक जनप्रतिनिधि हैं, जो इस तरह के गंभीर आरोपों से घिरे हैं। राजनीतिज्ञ आज आवश्यक बुराई हो गये हैं। पूर्व प्रधानमंत्रो इन्दिरा गांधी के उस दृढ़ कथन को कि भ्रष्टाचार विश्व जीवनशैली का अंग बन गया है, को दफना देना चाहिए। यह सच है कि आज हमारे अधिकांश कर्णधार सोये हुए हैं। यह सब मात्र भ्रष्टाचार ही नहीं, यह राजनीति की पूरी प्रक्रिया का अपराधीकरण है। और हर अपराध अपनी कोई न कोई निशानी छोड़ जाता है। लोकतंत्र की अस्वस्थता एवं बीमार होने का यह स्पष्ट संकेत है कि ऐसे न जाने कितने सांसद हैं जो एक कार्यकाल में ही अप्रत्याशित तरीके से अमीर हो जाते हैं। कुछ ऐसी ही स्थिति विधायकों के मामले में भी देखने को मिलती है। यह सही है कि विधायक और सांसद चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करते समय हलफनामा देकर अपनी संपत्ति का विवरण देते हैं, लेकिन वे यह कभी नहीं बताते कि उनकी संपत्ति में इतनी तेजी से इजाफा कैसे हुआ? नतीजा यह होता है कि उनकी संपत्ति का विवरण महज एक खबर बनकर रह जाती है। यह इसलिए पर्याप्त नहीं, क्योंकि हाल में सामने आए एक आंकड़े के अनुसार २०१४ में फिर से निर्वाचित हुए १५३ सांसदों की औसत संपत्ति में १४२ प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। एक चुनाव से दूसरे चुनाव के ५ बरसों के अन्तराल में जनप्रतिनिधियों की सम्पति में १० गुना से २० गुना तक वृद्धि हो जाती है। जबकि देश की अर्थव्यवस्था मात्र ८ प्रतिशत तक नहीं बढ़ पा रही है। इसमें दो राय नहीं कि सरकारी दफ्तरों में स्थानीय स्तर से लेकर नौकरशाहों के बीच तक भ्रष्टाचार की उलटी गंगा बह रही है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि राजनीति में धन व बल के बढ़ते वर्चस्व के चलते माफिया व आपराधिक तत्व राजसत्ता पर काबिज होने लगे हैं जिसके चलते भ्रष्टाचार का निरंतर पोषण जारी है।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 10 अप्रैल से 16 अप्रैल 2019 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।